ज्ञान दर्पण सहस्त्री

फूलचंद

करुणा सागर आध्यात्मिक मार्गदर्शक फूलचंद ने संपूर्ण पृथ्वी पर किसी भी प्रकार के भेदभाव बिना हजारों घंटे के प्रवचनों एवं अनेक पुस्तकों के माध्यम से समस्त जीवों को निज शुद्धात्मा का परिचय दिया है। आप स्वयं को देहरुपी राख की दीवार का पड़ोसी मानते हैं और मोक्षमार्ग का मुसाफिर जानते हैं। आपके ऑडियो–विडियो प्रवचन एवं साहित्य www.fulchandshastri.com एवं ASK UMARALA YouTube Channel पर उपलब्ध हैं। आपके प्रवचन विविध टेलिविजन चैनलों पर प्रतिदिन प्रसारित होते हैं।

प्रत्येक आत्मा में आत्मानुभूति एवं अतीन्द्रिय आनंद प्रकट करने का सामर्थ्य है। फूलचंद भावना भाते हैं कि उनके इस पृथ्वी से अलविदा होने से पहले १४२ ज्ञान दीपक प्रज्वलित हों, फिर १४२ ज्ञान दीपकों की परम्परा से ४१५ ज्ञान दीपक, ४१५ ज्ञान दीपकों की परम्परा से १ लाख ज्ञान दीपक और १ लाख ज्ञान दीपकों की परम्परा से अनंत ज्ञान दीपक प्रज्वलित हों। जो आत्मखोजी मिथ्यात्व एवं अज्ञानरुपी अंधकार से मुक्त होना चाहते हों, वे फूलचंद की प्रज्वलित ज्ञानज्योति के सानिध्य में रहकर अपनी भी ज्ञानज्योति प्रज्वलित कर सकते हैं। जीवन के इस अपूर्व एवं अमूल्य अवसर का लाभ लेकर ज्ञान दीपक! प्रज्वलन आत्म साधना का शुभारंभ करने हेतु आध्यात्मिक साधना केन्द्र, उमराला में हार्दिक स्वागत है।

ज्ञान दर्पण सहस्त्री

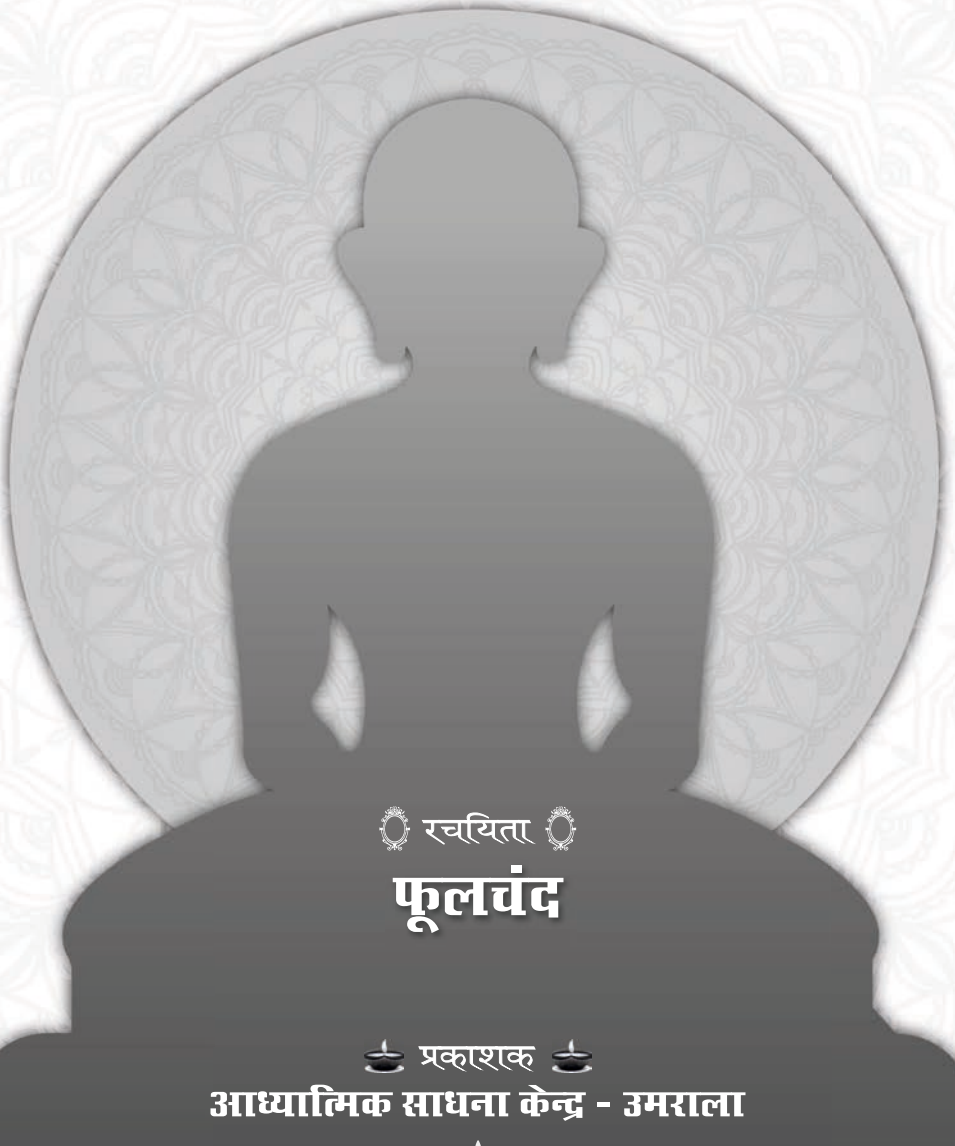

रचयिता
फूलचंद

प्रकाशक
आध्यात्मिक साधना केन्द्र - उमराला

प्रथम आवृत्ति : 7 जून 2019

प्रत : 3000

प्रकाशक :
आध्यात्मिक साधना केन्द्र - प्रधान केन्द्र
पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी प्रवचन हॉल,
चोगठ रोड़, उमराला, जि. भावनगर (गुजरात)
Website : www.fulchandshastri.com
E-mail : ask@fulchandshastri.com
YouTube : ASK UMARALA
: +91 9624446142
: Gyaan Deepak Prajwalan Atma Sadhana

प्राप्ति स्थान :
आध्यात्मिक साधना केन्द्र - प्रधान केन्द्र
पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी प्रवचन हॉल,
चोगठ रोड़, उमराला, जि. भावनगर (गुजरात)
किशोरभाई जैन : +91 2843235202/03
धर्मेन्द्रभाई जैन : +91 9898245201

टाईप सेटिंग एवं मुद्रक : प्रिन्ट-ओ-फास्ट
ब्रह्मपुरी, लुधियाना (पंजाब) — 141008.
फोन : +91-9872130555, 161-4061555
E-mail : printofastludhiana@gmail.com

चैतन्य स्वभावी निज शुद्धात्मा को
श्रद्धान में टंकोत्कीर्ण करके
परिणति की निर्मलता को उपलब्ध
समस्त सम्यग्दृष्टी ज्ञानी धर्मात्माओं को

सविनय समर्पित

प्रस्तावना

''ज्ञान दर्पण सहस्त्री'' यह पुस्तक नहीं, बल्कि शास्त्र है। ज्ञान दीपक प्रज्वलित करके अनादिकालीन मिथ्यात्वरूपी घने अंधकार को दूर करने में अत्यंत उपकारी शास्त्र है।

इस अद्भुत कृति के विषय में अथवा तो ये जिनके अगाध गंभीर ज्ञान का अंशमात्र है, उन परम कृपालु गुरुदेव श्री फूलचंद जी के विषय में कुछ भी कहना तो ऐसा हास्यास्पद दुस्साहस है जैसे कोई अन्धा किसी आँख वाले के लिये कुछ कहे। फिर भी भक्ति भरे हम ज्ञान दीपकों के हृदय ये दुस्साहस करने को मजबूर कर रहे हैं। स्वयं गुरुदेव श्री फूलचंद जी के शब्दों में – ''जब तक आत्मा में ज्ञान भरपूर है ऐसा विकल्प रहता है, तब तक भी आत्मा का अनुभव होता नहीं। आत्मा में ज्ञान नहीं, परन्तु आत्मा ही ज्ञानमय है, गुण–गुणी का भेद छूटते ही आत्मा का अखण्ड, अभेद, नित्य, एक स्वरूप सहज ही अनुभव में आता है।''

बस इसी सहज अनुभूति, स्वरूप की जागृति तक पहुँचाने वाली यह ज्ञान दर्पण सहस्त्री एक ऐसी अपूर्व, अद्भुत, अलौकिक, अनुपम कृति है, जो हम पामर पिपासु जीवों के लिये ''तीन भुवन में सार वीतराग–विज्ञानता'' का निरूपण करने वाली है। ज्ञानी गुरुवर का विशाल, गहन, गम्भीर श्रुतज्ञान, जो केवलज्ञान से बातें करता है; उसके एक अंश की झलक है, जो सुपात्र जीवों को भवसागर से पार उतारने वाली तरणी है, नौका है। कृपालु गुरुदेव के अगाध ज्ञान की महिमा जगाने वाली है; अंततः स्वयं की महिमा जगाने वाली है। क्योंकि प्रत्यक्ष दिखती अस्ति की मस्ती में कौन डूबना न चाहेगा?

ज्ञानी के श्रुतज्ञान की प्रतिसमय की पर्याय एक नय है। एक सेकण्ड में असंख्य समय होते हैं और असंख्य समयों में असंख्य पर्यायें पलटती हैं और असंख्य पर्यायों में असंख्य नय। आपश्री ने बताया कि कुछ ही क्षणों में

ये सहस्त्र उदाहरण आपके ज्ञान में सहज ही आ गये। तब विचारणीय है, आपके अनुपम, अद्‌भुत, अपार ज्ञान की महिमा ! आपश्री के चिंतन की गहराइयाँ, जहाँ से उद्‌भूत यह माखन, आपने इस ग्रंथ में परोसा है। आपश्री के अंतरंग की उत्तरोत्तर वृद्धिंगत, तेजी से स्वरूप की ओर दौड़ती–ढलती परिणति जिसमें से बाहर निकलना भी सुहाता नहीं है; तब फिर बाहर आ जाते हैं, तो हम अबोध जीवों को बोधित करने हेतु अत्यंत करुणा से पुकार उठती है, ''हे ज्ञान दीपक ! हे चैतन्य परमात्मा ! भावों से भींगकर सुनो और प्रयोग करो। तुम मेरे साथ–साथ यात्रा करो। यहाँ ठहरने जैसा कुछ भी नहीं है। मैं तो यात्री हूँ। सिद्धपुर पहुँचने से पहले अपने पुराने साथियों की मुलाकात लेने आया हूँ। यह तो स्टेशन है, डेस्टिनेशन नहीं। समय अत्यंत अल्प है, तुम थोड़ा जल्दी करो ! मेरे साथ यात्रा करो !''

इस अनमोल कृति में आपश्री ने लौकिक दर्पण संबंधी सहस्त्र दृष्टांतों के माध्यम से ज्ञान दर्पण को समझाया है। ज्ञान दर्पण अर्थात् जीव, हाँ, प्रत्येक जीव एक ज्ञान दर्पण है। हम सबको लौकिक दर्पण का तो परिचय ही नहीं, अनुभव भी है। तो बस ! इसी दर्पण को जानने वाला ज्ञान दर्पण है, वही मैं हूँ। मुझे अपनी महिमा आ जाये, तो मैं ही ज्ञान दीपक हूँ और मुझे मेरी महिमा बताने वाला, मुझमें मेरी ही महिमा जगाने वाला यह ग्रंथ है, जिसमें परम कृपालु गुरुदेव श्री ने अपने प्राण भरे हैं।

कम्प्यूटर पर टाईप करते–करते उंगलियाँ सूज गईं, पर करुणार्द्र हृदयी आपश्री को रचना होने तक ख्याल भी न आया। कैसी है ये जगत के समस्त जीवों के प्रति ज्ञानी की अकारण करुणा ! कैसी अद्‌भुत यह स्व की अस्ति की मस्ती !

इसी दौरान बीच में तबियत बिगड़ी; खून की उल्टी हुई तो सामने लगा दर्पण खून लगने से लाल हो गया, परंतु आपश्री का अपने देह की स्थिति की ओर तो ध्यान ही न गया और विचार चला, ''खून तो अंदर निरंतर दौड़ता है, पर ध्यान नहीं जाता; बाहर निकला तो ध्यान गया –

अरे रे ! देखो कितना खून ! ऐसे ही प्रत्येक जीव के अंतर में निरंतर बहता सहज ज्ञान का प्रवाह है। प्रत्येक जीव एक ज्ञान दर्पण है, परंतु निर्विकल्प अनुभूति प्रकटे बिना इसे अपनी महिमा ही नहीं आती।''

अपने इसी निरंतर प्रवाहित ज्ञान की महिमा जीव मात्र को प्रकट हो, यह सहज धारा और उस धारा का उद्गम स्थल – यह चैतन्य सत्ता; इसका बोध जगत के सभी जीवों को हो, ऐसे कारुण्य रस में भीगकर एक हजार दृष्टांतो सहित इस ग्रंथ की रचना हुई है। ज्ञात से अज्ञात की यात्रा, दर्पण से ज्ञान दर्पण की यात्रा, ज्ञान को जानकर सहज स्वरूप में ढल जाने की यात्रा सहज, सुगम, सरल हो और सभी ज्ञान दीपक इस शास्त्र के दृष्टांतों से स्वयं में स्वयं को प्राप्त होकर, प्रज्वलित ज्ञान दीपक होकर, अनंत ज्ञानियों की दीप से दीप प्रज्वलित करने की परम्परा को आगे बढ़ाकर स्वयं सिद्ध हो जायें, इस पावन भावना से ही इस ग्रंथ की रचना कृपालुदेव ने की है।

दर्पण के माध्यम से अनादि काल से भूले हुए ज्ञान दर्पण को एक हजार विभिन्न दृष्टांतों से तुलनात्मक अध्ययन करके अत्यंत स्पष्ट रूप से चित्रित ही कर दिया है। प्रथम १ से २७८ दृष्टांतों में अस्ति–अस्ति के रूप में, २७९ से ३६० तक ८२ दृष्टांतों में अस्ति–नास्ति के रूप में, ३६१ से ४२० तक ६० दृष्टांतों में नास्ति–अस्ति के रूप में, ४२१ से ८०६ तक ३८६ दृष्टांतों में नास्ति–नास्ति के रूप में, ८०७ से ८५७ तक ५१ दृष्टांतों में विशेष रूप से, ८५८ से १००० तक १४३ दृष्टांतों में ज्ञान दीपक लक्षण के माध्यम से ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझाया गया है।

भावों से भीगकर इस शास्त्र का अध्ययन करने पर अनादि काल की भटकन से थके हुए मुक्ति के लिए तरसते, छटपटाते सुपात्र जीवों को स्वरूप की प्राप्ति हुए बिना न रहेगी। कृपालु देव श्री फूलचंद जी द्वारा रचित इस शास्त्र का विचारपूर्वक गहराई से अध्ययन करके सभी जीव स्व की अस्ति की मस्ती को उपलब्ध हों, यही मंगल भावना है।

– १४२ ज्ञान दीपक !

ज्ञान दर्पण सहस्त्री

अस्ति-अस्ति अधिकार

१.	दर्पण उदाहरण है।	ज्ञान दर्पण स्वरूप है।
२.	दर्पण में नेत्र का प्रतिबिम्ब पड़ता है, परन्तु दर्पण और नेत्र दोनों स्वतंत्र है।	ज्ञान दर्पण में दृष्टि का प्रतिबिम्ब पड़ता है, परन्तु ज्ञान दर्पण और दृष्टि दोनों स्वतंत्र है।
३.	दर्पण साथी है।	ज्ञान दर्पण स्व है।
४.	दर्पण का स्वभाव स्वच्छता है।	ज्ञान दर्पण का स्वभाव स्वच्छता है।
५.	भवन की छत के मध्य में लटके हुए गोल दर्पण में सारा भवन प्रकाशित होता है।	केवल ज्ञान दर्पण में सम्पूर्ण लोकालोक प्रकाशित होता है।
६.	दर्पण के आश्रय से मेक–अप होता है।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से अज्ञानी जीव का जीवन परिवर्तित (मेक–अप) हो जाता है।
७.	दर्पण में अस्ति का ही प्रतिबिम्ब पड़ता है।	ज्ञान दर्पण में अस्ति एवं नास्ति दोनों के प्रतिबिम्ब पड़ते हैं।
८.	इन्द्रिय सुख के लक्ष्य से ही दर्पण को बनाया गया है।	अतीन्द्रिय सुख के लक्ष्य से ही ज्ञान दर्पण को बताया गया है।
९.	गर्भवती माता दर्पण में प्रतिबिम्बित होती है।	गर्भवती माता एवं गर्भ में रहने वाला बच्चा दोनों ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं।
१०.	दर्पण छोटा हो या बड़ा हो, पदार्थों को प्रतिबिम्बित करने का उसका स्वभाव नित्य है।	संसारी आत्मा का ज्ञान दर्पण हो या मुक्त आत्मा का, ज्ञेयों को जानने का उसका स्वभाव नित्य है।
११.	दर्पण न्यायोचित होता है।	ज्ञान दर्पण न्यायोचित होता है।

१२. दर्पण को साफ करने के लिये कागज निमित्त है।	ज्ञान दर्पण को साफ करने के लिये शास्त्र निमित्त है।
१३. दीपक की ज्योति प्रज्वलित होते ही दीपक ही नहीं, समस्त पदार्थ दर्पण में प्रतिबिम्बित होते दिखाई देते हैं।	ज्ञान दीपक की चैतन्य ज्योति प्रज्वलित होते ही ज्ञान दीपक ही नहीं, लोकालोक ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते दिखाई देते हैं।
१४. दर्पण अयोगी है।	ज्ञान दर्पण अयोगी है।
१५. दर्पण पूरण–गलन स्वभावी है।	ज्ञान दर्पण स्वभाव से परिपूर्ण है।
१६. दर्पण के किसी प्रदेश पर पदार्थ के किसी भाग का प्रतिबिम्ब पड़ता है।	ज्ञान दर्पण के समस्त प्रदेशों पर पदार्थ का प्रतिबिम्ब पड़ता है।
१७. संख्यात प्रदेशी दर्पण में असंख्यात पदार्थ प्रतिबिम्बित हो सकते हैं।	असंख्यात प्रदेशी ज्ञान दर्पण में अनंत ज्ञेय प्रतिबिम्बित हो सकते हैं।
१८. दर्पण कारखाने में से बाहर निकलते हैं।	ज्ञान दर्पण निगोद में से बाहर निकलते हैं।
१९. दर्पण महल तक पहुँच जाते हैं।	ज्ञान दर्पण मोक्ष महल तक पहुँच जाते हैं।
२०. दर्पण सीमंधर है।	ज्ञान दर्पण सीमंधर है।
२१. दर्पण अजीव है।	ज्ञान दर्पण जीव है।
२२. दर्पण को लगातार देखने पर मनुष्य पागल हो सकता है।	ज्ञान दर्पण को लगातार देखने पर जीव के पाप गल सकते हैं।
२३. जिसने दर्पण को देखा, उसने अपने पड़ोसी को देखा।	जिसने ज्ञान दर्पण को देखा, उसने स्वरूप को देखा।
२४. देवालय में दर्पण होता है।	देह देवालय में ज्ञान दर्पण होता है।

२५. अन्य पदार्थों की तरह धूल भी दर्पण में प्रतिबिम्बित ही होती है।	अन्य ज्ञेयों की तरह रागादि भाव भी ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित ही होते हैं।
२६. दर्पण सदैव स्वस्थ होता है।	ज्ञान दर्पण सदैव स्वस्थ होता है।
२७. दर्पण पर श्रद्धा न हो, तो दर्पण को देखने का प्रयोजन क्या?	ज्ञान दर्पण पर श्रद्धा न हो, तो ज्ञान दर्पण को जानने का प्रयोजन क्या?
२८. अपने दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पदार्थों का मालिक स्वयं को मानना अपराध है।	अपने ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले ज्ञेयों का स्वामी स्वयं को मानना अपराध है।
२९. दर्पण में सिर्फ वर्ण का प्रतिबिम्ब पड़ता है।	ज्ञान दर्पण में लोकालोक झलकता है।
३०. पदार्थ न होता, तो दर्पण में ऐसी अवस्था नहीं होती, यह मान्यता झूठी है।	ज्ञेय न होता, तो ज्ञान दर्पण में ऐसी अवस्था नहीं होती, यह मान्यता झूठी है।
३१. खण्डित दर्पण में पदार्थ अनेकरूप प्रतिबिम्बित होते हैं।	खण्ड-खण्डरूप क्षयोपशम ज्ञान दर्पण में भेदरूप ज्ञेय ही जानने में आते हैं।
३२. दर्पण की अवस्था में दर्पण का परिणमन है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था में ज्ञान दर्पण का परिणमन है।
३३. दर्पण को प्रतिक्षण सम्भालकर ध्यान से रखते हैं।	ज्ञानी प्रतिक्षण ज्ञान दर्पण का ध्यान करते हैं।
३४. भामंडल के दर्पण में भव्य जीवों को सात भव दिखाई देते हैं।	ज्ञान दर्पण में भव्य जीवों को स्वरूप का ज्ञान होता है।
३५. दर्पण पर लगी धूल दर्पण के लिये परद्रव्य है।	ज्ञान दर्पण पर लगी रागादि भावों की धूल ज्ञान दर्पण के लिये परभाव है।

३६. पत्नी बार–बार दर्पण में देखती है, तो घर में पति के साथ विवाद होता है।	पर्याय बार–बार ज्ञान दर्पण में देखती है, तो आत्मा समस्त विवादों से मुक्त होता है।
३७. अज्ञानी को दर्पण में दृश्य दिखाई देने पर भी दर्पण की स्वच्छता की प्रतीति रहती है।	ज्ञानी को ज्ञान दर्पण में दृश्य दिखाई देने पर भी ज्ञान दर्पण की स्वच्छता की प्रतीति रहती है।
३८. दर्पण शब्दों से पार है।	ज्ञान दर्पण शब्दों से पार है।
३९. दर्पण प्रामाणिक है।	ज्ञान दर्पण प्रामाणिक है।
४०. दर्पण उस किनारे पर है।	ज्ञान दर्पण इस किनारे पर है।
४१. दर्पण में मार्ग प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण में मोक्षमार्ग प्रतिबिम्बित होता है।
४२. दर्पण को देखा कि मिरर को देखा।	ज्ञान दर्पण को देखा कि मीरा को कोई और देखा अर्थात् पर्याय को पराया देखा।
४३. दर्पण देखोगे तो प्रेमी का स्मरण होगा।	ज्ञान दर्पण देखोगे, तो परमात्मा का अनुभव होगा।
४४. दर्पण देखने से किसी की याद आती है।	ज्ञान दर्पण देखने से याद ही मिट जाती है।
४५. दर्पण के पीछे लगी पतली परत हट जाये, तो दर्पण कांच हो जाता है।	ज्ञान दर्पण के साथ लगी विकार की परत हट जाये, तो जीवन कांच की भांति पारदर्शक हो जाता है।
४६. दर्पण में चार अक्षरों का राज है।	ज्ञान दर्पण में छह अक्षरों का राज है।
४७. दर्पण में अक्षर को पढ़ना कठिन है।	ज्ञान दर्पण में अक्षर को पढ़ना सहज है।
४८. शिक्षक दर्पण का ज्ञान देते हैं।	सद्गुरु ज्ञान दर्पण का ज्ञान देते हैं।

४९. दर्पण में पलटकर भी नहीं पलटने का स्वभाव होता है।	ज्ञान दर्पण में पलटकर भी नहीं पलटने का स्वभाव होता है।
५०. दर्पण में नहीं पलटकर भी पलटने का स्वभाव होता है।	ज्ञान दर्पण में नहीं पलटकर भी पलटने का स्वभाव होता है।
५१. दर्पण में बेचने की क्रिया ही प्रतिबिम्बित होती है।	ज्ञान दर्पण में बेचने की क्रिया एवं विकल्प दोनों प्रतिबिम्बित होते हैं।
५२. दर्पण में खरीदने की क्रिया ही प्रतिबिम्बित होती है।	ज्ञान दर्पण में खरीदने की क्रिया एवं विकल्प दोनों प्रतिबिम्बित होते हैं।
५३. रात्रि के अंधेरे में प्रज्वलित दीपक के प्रकाश से दर्पण में स्वयं का मुख देखते हैं।	कलिकाल की रात्रि के अज्ञान के अंधेरे में प्रज्वलित ज्ञान दीपक के ज्ञान प्रकाश से ज्ञान दर्पण में स्वरूप का दर्शन होता है।
५४. शरीर में दर्पण हो, तो प्राणी की मृत्यु हो जाती है।	शरीर में ज्ञान दर्पण हो, तो प्राणी को जीवन प्राप्त होता है।
५५. दर्पण को लोकेषणा से क्या?	ज्ञान दर्पण को लोकेषणा से क्या?
५६. अनपढ़ भी दर्पण देख सकता है।	अनपढ़ भी ज्ञान दर्पण को देख सकता है।
५७. दर्पण अरागी है।	ज्ञान दर्पण अरागी है।
५८. दर्पण परजात है।	ज्ञान दर्पण स्वजात है।
५९. दर्पण एकाकार होता है।	ज्ञान दर्पण एकाकार होता है।
६०. दर्पण अनेकाकार होता है।	ज्ञान दर्पण अनेकाकार होता है।
६१. पीछे से आ रही दूसरी गाड़ियों को देखने के लिये उत्तल दर्पण का उपयोग होता है।	सिद्धालय में विराजमान होने वाले अनंत भावि सिद्ध ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं।

६२. दर्पण में सामने देखने पर पीछे की गाड़ियाँ दिखाई देती हैं।	ज्ञान दर्पण में सामने देखने पर भूतकाल की अवस्थायें दिखाई देती हैं।
६३. दर्पण में चाँद को छूना, यह बच्चे की कल्पना है।	ज्ञान दर्पण में संयोग एवं संयोगीभावों का अनुभव करना, यह अज्ञानी की कल्पना है।
६४. एक ही गाड़ी में विभिन्न प्रकार के दर्पणों का संयोग पाया जाता है।	एक ही शरीर में विभिन्न प्रकार के ज्ञान दर्पणों का संयोग पाया जाता है।
६५. दर्पण उदासीन होता है।	ज्ञान दर्पण उदासीन होता है।
६६. धर्मसभा में कोई दर्पण को देखते हैं।	धर्मसभा में कोई ज्ञान दर्पण को देखते हैं।
६७. दर्पण अनित्य है।	ज्ञान दर्पण नित्य है।
६८. स्त्रियों को दर्पण में लीन होने में आनन्द आता है।	आत्मा को ज्ञान दर्पण में लीन होने में सुख प्राप्त होता है।
६९. दर्पण स्वयं कर्त्ता है।	ज्ञान दर्पण स्वयं कर्त्ता है।
७०. दर्पण स्वयं कर्म है।	ज्ञान दर्पण स्वयं कर्म है।
७१. दर्पण स्वयं करण है।	ज्ञान दर्पण स्वयं करण है।
७२. दर्पण स्वयं संप्रदान है।	ज्ञान दर्पण स्वयं संप्रदान है।
७३. दर्पण स्वयं अपादान है।	ज्ञान दर्पण स्वयं अपादान है।
७४. दर्पण स्वयं अधिकरण है।	ज्ञान दर्पण स्वयं अधिकरण है।
७५. दर्पण भटकाता नहीं, अज्ञान भटकाता है।	ज्ञान दर्पण भटकाता नहीं, अज्ञान भटकाता है।
७६. दर्पण क्षणिक के बोध का हेतु है।	ज्ञान दर्पण नित्य के अनुभव का हेतु है।
७७. दर्पण का स्वभाव अधोगमन है।	ज्ञान दर्पण का स्वभाव उर्ध्वगमन है।
७८. गरीब का दिल दर्पण है।	ज्ञान दीपक ज्ञान दर्पण है।

७९. दर्पण दुःखदायक नहीं है, दर्पण की गैरसमझ दुःखदायक है।	ज्ञान दर्पण दुःखदायक नहीं है, ज्ञान दर्पण की गैरसमझ दुःखदायक है।
८०. दर्पण पर लगी धूल दूर हो सकती है।	ज्ञान दर्पण पर लगी कर्मों की धूल दूर हो सकती है।
८१. चंद दूर है, दर्पण हाथ में है।	गुरु दूर हैं, ज्ञान दर्पण हाथ में है।
८२. दर्पण छूकर भी ज्ञानी के लिये अछूता है।	ज्ञान दर्पण न छूकर भी ज्ञानी को छू लेता है।
८३. दर्पण उपवास करता है।	ज्ञान दर्पण उपवास करता है।
८४. दर्पण का संयोग अचेतन संयोग है।	ज्ञान दर्पण का संयोग चेतन संयोग है।
८५. दर्पण का मोल होता है।	ज्ञान दर्पण अनमोल है।
८६. दर्पण परज्ञेय है।	ज्ञान दर्पण स्वज्ञेय है।
८७. दर्पण के किसी विशिष्ट प्रदेश पर विशिष्ट पदार्थ झलकते हैं।	ज्ञान दर्पण के समस्त प्रदेशों पर सम्पूर्ण ज्ञेय झलकते हैं।
८८. लिफ़्ट के दर्पण में देखकर उपर भी जा सकते है और नीचे भी जा सकते है।	ज्ञान दर्पण में देखकर सिर्फ ऊर्ध्व गमन ही होता है।
८९. शरीर शिथिल हो तो भी दर्पण में देखा जा सकता है।	शरीर शिथिल हो तो भी ज्ञान दर्पण में देखा जा सकता है।
९०. एम्ब्युलेंस पर उलटे अक्षर लिखे जाते है, जिससे दर्पण में सीधे प्रतिबिम्बित हों।	एम्ब्युलेंस पर उलटे अक्षर लिखे जाते है, जिससे दर्पण और ज्ञान दर्पण में सीधे प्रतिबिम्बित हों।
९१. दर्पण अल्पायु होता है।	ज्ञान दर्पण दीर्घायु होता है।
९२. दर्पण लोक का द्रव्य है।	ज्ञान दर्पण लोक का द्रव्य है।
९३. साफ दर्पण मलिन होता है।	मलिन ज्ञान दर्पण साफ होता है।

९४. रोते हुए बच्चे को दर्पण दिखाया और बच्चा रोना बन्द हो गया।	दुःखी अज्ञानियों को ज्ञान दर्पण दिखाया और अज्ञानी का दुःख दूर हो गया।
९५. दर्पण का हीरा होता है।	ज्ञान दर्पण स्वयं चैतन्य हीरा है।
९६. सम्राट भी दर्पण में देखते हैं।	सम्राट भी ज्ञान दर्पण में देखते हैं।
९७. दर्पण पदार्थ भी है और तत्त्व भी है।	ज्ञान दर्पण पदार्थ भी है और तत्त्व भी है।
९८. अमल दर्पण में पदार्थ प्रतिबिम्बित होते हैं।	अमल ज्ञान दर्पण में ज्ञेय प्रतिबिम्बित होते हैं।
९९. अचल दर्पण में पदार्थ प्रतिबिम्बित होते हैं।	अचल ज्ञान दर्पण में ज्ञेय प्रतिबिम्बित होते हैं।
१००. सर्व दर्पण अपने–अपने में स्थित होते हैं।	सर्व ज्ञान दर्पण अपने–अपने में स्थित होते हैं।
१०१. दर्पण में अस्तित्व गुण है।	ज्ञान दर्पण में अस्तित्व गुण है।
१०२. दर्पण में वस्तुत्व गुण है।	ज्ञान दर्पण में वस्तुत्व गुण है।
१०३. दर्पण में द्रव्यत्व गुण है।	ज्ञान दर्पण में द्रव्यत्व गुण है।
१०४. दर्पण में प्रमेयत्व गुण है।	ज्ञान दर्पण में प्रमेयत्व गुण है।
१०५. दर्पण में अगुरुलघुत्व गुण है।	ज्ञान दर्पण में अगुरुलघुत्व गुण है।
१०६. दर्पण में प्रदेशत्व गुण है।	ज्ञान दर्पण में प्रदेशत्व गुण है।
१०७. दर्पण में क्रियावती गुण है।	ज्ञान दर्पण में क्रियावती गुण है।
१०८. दर्पण में भाववती शक्ति है।	ज्ञान दर्पण में भाववती शक्ति है।
१०९. दर्पण में वैभाविक गुण है।	ज्ञान दर्पण में वैभाविक गुण है।
११०. दो दर्पण के बीच अकर्तावाद के सिद्धांत की वज्र की दीवार है।	दो ज्ञान दर्पण के बीच अकर्तावाद के सिद्धांत की वज्र की दीवार है।
१११. दर्पण में रत्न प्रतिबिम्बित होते हैं।	ज्ञान दर्पण में रत्नत्रय प्रतिबिम्बित होते हैं।

११२. दर्पण की किताब को पढ़ते ही मत रहना, दर्पण को भी देखना।	ज्ञान दर्पण सहस्त्री को पढ़ते ही मत रहना, ज्ञान दर्पण को भी देखना।
११३. दर्पण में वर्तमान काल के पदार्थ ही झलक सकते हैं।	ज्ञान दर्पण में एक समय में त्रिकालवर्ती ज्ञेयों के झलकने का सामर्थ्य हैं।
११४. दर्पण में तो वही मूर्तिक पदार्थ झलकते हैं, जो उसके सामने आते हैं।	ज्ञान दर्पण में तो समीपवर्ती, दूरवर्ती, भूतकालीन, वर्तमान एवं भावी, सूक्ष्म और स्थूल सभी पदार्थ एकसाथ एक जैसे स्पष्ट झलक जाते हैं।
११५. दर्पण में तो समीपवर्ती पदार्थ स्पष्ट और दूरवर्ती पदार्थ अस्पष्ट झलकते हैं।	ज्ञान दर्पण में तो समीपवर्ती– दूरवर्ती, स्थूल – सूक्ष्म, भूतकालीन एवं भावी सभी पदार्थ वर्तमानवत् ही स्पष्ट प्रतिभासित होते हैं।
११६. अज्ञानी को दर्पण सौंदर्यवान दिखता है।	ज्ञानी को ज्ञान दर्पण सौंदर्यवान दिखता है।
११७. दर्पण पिंड है।	ज्ञान दर्पण घनपिंड है।
११८. दर्पण में अनंत गुण हैं।	ज्ञान दर्पण में अनंत गुण हैं।
११९. दर्पण में अनंतानंत पर्यायें हैं।	ज्ञान दर्पण में अनंतानंत पर्यायें हैं।
१२०. दर्पण का अवग्रह ज्ञान होता है।	ज्ञान दर्पण का अवग्रह ज्ञान होता है।
१२१. दर्पण का इहा ज्ञान होता है।	ज्ञान दर्पण का इहा ज्ञान होता है।
१२२. दर्पण का अवाय ज्ञान होता है।	ज्ञान दर्पण का अवाय ज्ञान होता है।
१२३. दर्पण का धारणा ज्ञान होता है।	ज्ञान दर्पण का धारणा ज्ञान होता है।

१२४. दर्पण किसी के लिये उपकारी हो सकता है।	ज्ञान दर्पण ज्ञान दीपक के लिये परम उपकारी है।
१२५. दर्पण अस्तिकाय है।	ज्ञान दर्पण अस्तिकाय है।
१२६. किसी भी आकार के दर्पण में किसी भी आकार के दर्पण का प्रतिबिम्ब पड़ सकता है।	किसी भी आकार के ज्ञान दर्पण में किसी भी आकार के ज्ञान दर्पण का प्रतिबिम्ब पड़ सकता है।
१२७. दर्पण अनंत शक्तिशाली है।	ज्ञान दर्पण अनंत शक्तिशाली है।
१२८. दर्पण का स्वरूप न समझने पर कमरे के सम्बन्ध में भ्रम पैदा हो सकता है।	ज्ञान दर्पण का स्वरूप न समझने पर लोक के सम्बन्ध में भ्रम पैदा हो सकता है।
१२९. रेलगाड़ी में दर्पण यात्रा करता है।	देह में ज्ञान दर्पण यात्रा करता है।
१३०. दर्पण को प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री पद से क्या लेना – देना?	ज्ञान दर्पण को प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री पद से क्या लेना – देना?
१३१. दर्पण को छूने पर प्रतिबिम्बित पदार्थों को नहीं, बल्कि दर्पण को ही छूते हैं।	ज्ञान दर्पण का अनुभव करने पर प्रतिबिम्बित ज्ञेयों को नहीं, बल्कि ज्ञान दर्पण को ही अनुभव करते हैं।
१३२. दर्पण को भाव भाये बिना ही धूल चिपकती है।	ज्ञान दर्पण पर रागादि भाव भाने पर कर्मों की धूल चिपकती है।
१३३. दर्पण की गति में धर्मास्तिकाय द्रव्य निमित्त बनता है।	ज्ञान दर्पण की गति में धर्मास्तिकाय द्रव्य निमित्त बनता है।
१३४. दर्पण की स्थिति में अधर्मास्तिकाय द्रव्य निमित्त बनता है।	ज्ञान दर्पण की स्थिति में अधर्मास्तिकाय द्रव्य निमित्त बनता है।

१३५. दर्पण के अवगाहन में आकाश द्रव्य निमित्त बनता है।	ज्ञान दर्पण के अवगाहन में आकाश द्रव्य निमित्त बनता है।
१३६. दर्पण के परिणमन में काल द्रव्य निमित्त बनता है।	ज्ञान दर्पण के परिणमन में काल द्रव्य निमित्त बनता है।
१३७. दर्पण के लक्ष्य से विकल्प में वृद्धि होती है।	ज्ञान दर्पण के लक्ष्य से विकल्प में हानि होती है।
१३८. दर्पण अनेकांत स्वरूपी है।	ज्ञान दर्पण अनेकांत स्वरूपी है।
१३९. दर्पण तो दर्पण ही है, फिक्र वे करें जिनकी शक्लों में कुछ और दिल में कुछ और है।	ज्ञान दर्पण तो ज्ञान दर्पण ही है, फिक्र वे करें जिनकी क्रिया में कुछ और अभिप्राय में कुछ और है।
१४०. विष्टा में भी दर्पण की स्वच्छता का बोध हो सकता है।	विष्टा में भी ज्ञान दर्पण की स्वच्छता का बोध हो सकता है।
१४१. दर्पण (आई) ना है।	ज्ञान दर्पण (आई) हूँ।
१४२. दर्पण में चाँद प्रतिबिम्बित होता है, परन्तु दर्पण से चाँद अतिदूर है।	गुरु के ज्ञान दर्पण में शिष्य के ज्ञान दीपक प्रतिबिम्बित होते हैं, परन्तु ज्ञान दर्पण से ज्ञान दीपक अतिदूर हैं।
१४३. दर्पण में १४२ प्रज्वलित दीपक प्रकाशित होते हैं, परन्तु दर्पण निर्विकल्प है।	ज्ञान दर्पण में १४२ प्रज्वलित ज्ञान दीपक प्रकाशित होते हैं, परन्तु ज्ञान दर्पण निर्विकल्प है।
१४४. समतल दर्पण भी दर्पण ही है।	समश्रेणी में विराजमान सिद्धों का ज्ञान दर्पण भी ज्ञान दर्पण ही है।
१४५. उत्तल दर्पण भी दर्पण ही है।	उर्ध्वलोक में विराजमान सिद्धों का ज्ञान दर्पण भी ज्ञान दर्पण ही है।
१४६. अपनी छवि देखने के लिये प्रायः समतल दर्पण का उपयोग होता है।	आत्मा का स्वरूप देखने के लिये निर्विकल्प ज्ञान दर्पण का उपयोग होता है।

१४७. प्रकाश को एक बिन्दु पर केन्द्रित करने के लिये दर्पण का उपयोग होता है।

१४८. कुछ लोग दर्पण की बजाय दर्पण की फ्रेम से अधिक प्रभावित हो जाते हैं।

१४९. प्रज्वलित दीपक की ज्योति से दर्पण प्रकाशित होता है।

१५०. दर्पण की सिद्धि अनात्मसिद्धि है।

१५१. दर्पण इन्द्रिय–गोचर है।

१५२. दर्पण को समझाने वाले कृपालु हैं।

१५३. अनंत गुणाधिपति दर्पण की स्वच्छता को मुख्य करके दर्पण का स्वरूप समझाया जाता है।

१५४. अनंत गुणाधिपति दर्पण की स्वच्छता को मुख्य करके दर्पण का स्वरूप समझ में आता है।

१५५. शब्द नय से दर्पण शब्द को दर्पण कहते हैं।

१५६. अर्थ नय से दर्पण पदार्थ को दर्पण कहते हैं।

१५७. ज्ञान नय से दर्पण को जानने वाले ज्ञान को दर्पण कहते हैं।

उपयोग को एक आत्मा पर केन्द्रित करने के लिये ज्ञान दर्पण का उपयोग होता है।

कुछ लोग ज्ञान दर्पण की बजाय ज्ञान दर्पण की कर्मरूपी फ्रेम से अधिक प्रभावित हो जाते हैं।

प्रज्वलित ज्ञान दीपक की ज्योति से ज्ञान दर्पण प्रकाशित होता है।

ज्ञान दर्पण की सिद्धि आत्मसिद्धि है।

ज्ञान दर्पण इन्द्रिय–अगोचर है।

ज्ञान दर्पण को समझाने वाले परम कृपालु हैं।

अनंत गुणाधिपति ज्ञान दर्पण की स्वच्छता को मुख्य करके ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझाया जाता है।

अनंत गुणाधिपति ज्ञान दर्पण की स्वच्छता को मुख्य करके ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझ में आता है।

शब्द नय से ज्ञान दर्पण शब्द को ज्ञान दर्पण कहते हैं।

अर्थ नय से ज्ञान दर्पण पदार्थ को ज्ञान दर्पण कहते हैं।

ज्ञान नय से ज्ञान दर्पण को जानने वाले ज्ञान को ज्ञान दर्पण कहते हैं।

१५८. दर्पण लौकिक प्रमाण है।	ज्ञान दर्पण अलौकिक प्रमाण है।
१५९. दर्पण में भाषा ही प्रतिबिम्बित हो सकती है।	ज्ञान दर्पण में भाषा सहित भाव भी प्रतिबिम्बित हो सकते हैं।
१६०. दर्पण तो है, परन्तु दर्पण में देखता कौन है?	ज्ञान दर्पण तो है, परन्तु ज्ञान दर्पण में देखता कौन है?
१६१. दर्पण का प्रयोजन होने पर भी कुछ लोग फ्रेम की डिज़ाईन में ही अधिक रुचि लेते हैं।	ज्ञान दर्पण का प्रयोजन होने पर भी कुछ लोग शरीर के रंग–रूप में ही अधिक रुचि लेते हैं।
१६२. दर्पण की स्वच्छता के कारण दर्पण को स्वच्छ कहते हैं।	ज्ञान दर्पण की स्वच्छता के कारण ज्ञान दर्पण को स्वच्छ कहते हैं।
१६३. वर्तमानकालीन दर्पण ही उपयोगी होता है।	पूर्णता को प्राप्त त्रिकालवर्ती समस्त ज्ञान दर्पण उपयोगी होते हैं।
१६४. दर्पण में पदार्थ को मिलाने की चेष्टा व्यर्थ है।	ज्ञान दर्पण में पदार्थ को मिलाने की चेष्टा व्यर्थ है।
१६५. दर्पण में से पदार्थ को बाहर निकालने की चेष्टा व्यर्थ है।	ज्ञान दर्पण में से पदार्थ को बाहर निकालने की चेष्टा व्यर्थ है।
१६६. दर्पण का विकल्प आकुलतामय है।	ज्ञान दर्पण का विकल्प आकुलतामय है।
१६७. दर्पण का विकल्प दुःखमय है।	ज्ञान दर्पण का विकल्प दुःखमय है।
१६८. दर्पण का विकल्प जड़ है।	ज्ञान दर्पण का विकल्प जड़ है।
१६९. दर्पण का विकल्प औदयिकभाव है।	ज्ञान दर्पण का विकल्प औदयिकभाव है।
१७०. दर्पण के विकल्प में एकत्व मिथ्यात्व है।	ज्ञान दर्पण के विकल्प में एकत्व मिथ्यात्व है।

१७१. दर्पण में समयसार शास्त्र प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण में समयसार प्रतिबिम्बित होता है।
१७२. दर्पण में प्रवचनसार शास्त्र प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण में प्रवचनसार प्रतिबिम्बित होता है।
१७३. दर्पण में नियमसार शास्त्र प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण में नियमसार प्रतिबिम्बित होता है।
१७४. दर्पण लिंगग्रहण है।	ज्ञान दर्पण लिंगग्रहण है।
१७५. दर्पण अलिंगग्रहण है।	ज्ञान दर्पण अलिंगग्रहण है।
१७६. दर्पण रहस्यपूर्ण है।	ज्ञान दर्पण रहस्यपूर्ण है।
१७७. दर्पण निरावलंबी है।	ज्ञान दर्पण निरावलंबी है।
१७८. गुफा में दर्पण की स्वच्छता निराली रहती है।	गुफा में ज्ञान दर्पण की स्वच्छता निराली रहती है।
१७९. दर्पण को देखकर आदमी स्वयं को जानता है।	ज्ञान दर्पण को देखकर आत्मा स्वयं को जानता है।
१८०. विज्ञान ने दर्पण को खोजा।	भेदविज्ञान ने ज्ञान दर्पण को खोजा।
१८१. दर्पण देखकर तसल्ली हुई, हमको इस घर में जानता है कोई।	ज्ञान दर्पण देखकर तसल्ली हुई, स्वरूप को इस लोक में जानता है कोई।
१८२. दर्पण का दीवाना मनुष्य घर में लगता है, वास्तव में घर में नहीं, दर्पण में होता है।	ज्ञान दर्पण के दीवाने मुनि गुफा में लगते हैं, वास्तव में गुफा में नहीं, ज्ञान दर्पण में होते हैं।
१८३. ज्ञानियों को तो दर्पण में एक सफेद बाल देखकर वैराग्य प्रकट होता है।	ज्ञानियों को तो ज्ञान दर्पण में एक निर्मल चैतन्य तत्त्व देखकर वैराग्य प्रकट होता है।
१८४. मक्खी को दर्पण पर बैठना, अच्छा लगता है।	मुनि को ज्ञान दर्पण पर विराजमान होना, अच्छा लगता है।

१८५. मुनि दर्पण का ध्यान करें, तो वन में रहकर भी भीड़ में हैं।	गृहस्थ ज्ञान दर्पण का ध्यान करें, तो भीड़ में रहकर भी वन (एक) में हैं।
१८६. तथाकथित त्यागी दर्पण को देखकर चेहरे पर राख लगाते हैं।	वीतरागी संत ज्ञान दर्पण में देह को ही राख की दीवार के रूप में देखते हैं।
१८७. रमणी का वरण करने से पहले, दर्पण में चेहरा देखकर रमणी–वरण की यात्रा के लिये निकलते हैं।	शिवरमणी (मोक्ष) का वरण करने से पहले, ज्ञानी ज्ञान दर्पण में चैतन्य स्वरूप देखकर शिवरमणी–वरण की यात्रा के लिये निकलते हैं।
१८८. धूप के प्रतिबिम्ब से दर्पण निर्विकल्प रहता है।	धूप के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण निर्विकल्प रहता है।
१८९. छांव के प्रतिबिम्ब से दर्पण निर्विकल्प रहता है।	छांव के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण निर्विकल्प रहता है।
१९०. बाल कटने की क्रिया दर्पण में झलकती है।	केश लोंच की क्रिया ज्ञान दर्पण में झलकती है।
१९१. भवन में दर्पण में चमड़े का दर्शन हुआ।	वन में ज्ञान दर्पण में चैतन्य का दर्शन हुआ।
१९२. लोक में कहते हैं कि दर्पण को देखोगे तो धन प्राप्त होगा।	ज्ञानी कहते हैं कि ज्ञान दर्पण को देखोगे तो धन आदि परिग्रह छूट जायेगा और आत्मिक धन उपलब्ध होगा।
१९३. दर्पण निर्ग्रंथ होता है।	ज्ञान दर्पण निर्ग्रंथ होता है।
१९४. दर्पण स्वतंत्र है।	ज्ञान दर्पण स्वतंत्र है।
१९५. दर्पण स्वाधीन है।	ज्ञान दर्पण स्वाधीन है।
१९६. दर्पण सहज है।	ज्ञान दर्पण सहज है।
१९७. दर्पण शत्रु नहीं है, दर्पण की गैरसमझ शत्रुता खड़ी करती है।	ज्ञान दर्पण शत्रु नहीं है, ज्ञान दर्पण की गैरसमझ शत्रुता खड़ी करती है।

१९८. दर्पण निष्क्रिय रहकर भी सक्रिय रहता है।	ज्ञान दर्पण निष्क्रिय रहकर भी सक्रिय रहता है।
१९९. दर्पण अनेक प्रकार के होते हैं।	ज्ञान दर्पण अनेक प्रकार के होते हैं।
२००. दर्पण द्रव्य भी है, पर्याय भी है।	ज्ञान दर्पण द्रव्य भी है, पर्याय भी है।
२०१. दर्पण की अर्थ पर्याय होती है।	ज्ञान दर्पण की अर्थ पर्याय होती है।
२०२. दर्पण की व्यंजन पर्याय होती है।	ज्ञान दर्पण की व्यंजन पर्याय होती है।
२०३. दर्पण की अवस्था दर्पण से कथंचित् भिन्न है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था ज्ञान दर्पण से कथंचित् भिन्न है।
२०४. दर्पण की अवस्था दर्पण से कथंचित् अभिन्न है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था ज्ञान दर्पण से कथंचित् अभिन्न है।
२०५. दर्पण की अवस्था एक समय की होती है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था एक समय की होती है।
२०६. दर्पण में जिस समय पूर्व अवस्था का व्यय होता है, उसी समय नवीन अवस्था का उत्पाद होता है।	ज्ञान दर्पण में जिस समय पूर्व अवस्था का व्यय होता है, उसी समय नवीन अवस्था का उत्पाद होता है।
२०७. दर्पण की अवस्था स्वयं की तत्समय की योग्यता के कारण होती है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था स्वयं की तत्समय की योग्यता के कारण होती है।
२०८. दर्पण की अवस्था का जन्म होता है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था का जन्म होता है।
२०९. दर्पण की अवस्था की मृत्यु होती है।	ज्ञान दर्पण की अवस्था की मृत्यु होती है।
२१०. जिस दर्पण पर धूल लगी हो, वह दर्पण धूल से भिन्न है।	जिस ज्ञान दर्पण पर रागादि भावों की धूल लगी हो, वह ज्ञान दर्पण रागादि भावों से भिन्न है।

२११. किसी भी दिशा पर रूपी दर्पण का मुख होने पर भी दर्पण स्वयं की सत्ता में ही स्थित है।	आकाश के किसी भी प्रदेश पर रहकर भी ज्ञान दर्पण स्वयं की सत्ता में ही स्थित है।
२१२. शरीर की सत्ता का बोध कराने में दर्पण महान साधन है।	भगवान आत्मा की सत्ता का बोध कराने में ज्ञान दर्पण महान साधन है।
२१३. दर्पण की ओर न देखो, तो दर्पण नाराज होता है क्या?	ज्ञान दर्पण की ओर न देखो, तो ज्ञान दर्पण नाराज होता है क्या?
२१४. राज महल की दीवार हो तो भी, दर्पण को क्या?	राज की राख की दीवार हो तो भी, ज्ञान दर्पण को क्या?
२१५. रूपी दर्पण का आधार दीवार होने पर भी रूपी दर्पण स्वयं के अस्तित्व के बल पर टिका है।	ज्ञान दर्पण का आधार राख की दीवार होने पर भी ज्ञान दर्पण स्वयं के अस्तित्व के बल पर टिका है।
२१६. प्रतिसमय परिणमित होकर भी दर्पण का स्वच्छ स्वभाव सदैव कायम रहता है।	प्रतिसमय परिणमित होकर भी ज्ञान दर्पण का स्वच्छ स्वभाव सदैव कायम रहता है।
२१७. व्यवहार से गुरु के मुख रूपी दर्पण में परमात्मा के दर्शन होते हैं।	निश्चय से ज्ञान दर्पण में परमात्मा के दर्शन होते हैं।
२१८. घर में बसकर दर्पण को बसाओ।	ज्ञान दर्पण में बसकर मोक्षमहल को बसाओ।
२१९. दर्पण मन से पार है।	ज्ञान दर्पण मन से पार है।
२२०. दर्पण मनुष्य के मन की उपज है।	ज्ञान दर्पण मानव और मन से पार अज है।
२२१. दूसरों पर आरोप लगाने से पहले अपना चेहरा दर्पण में देख लेना चाहिए।	परद्रव्यों को दोषी ठहराने से पहले ज्ञान दर्पण में स्वयं को जान लेना चाहिए।

२२२. उठने के बाद अज्ञानी दर्पण को देखते हैं।	ज्ञान दर्पण को देखकर ज्ञानी सदैव जागते हैं।
२२३. दर्पण निरपराधी है।	ज्ञान दर्पण निरपराधी है।
२२४. दर्पण श्रेष्ठ वक्ता है।	ज्ञान दर्पण स्पष्ट ज्ञाता है।
२२५. दर्पण में क्रिया होती है।	ज्ञान दर्पण में क्रिया होती है।
२२६. दर्पण में वक्रता केन्द्र होता है।	ज्ञान दर्पण वक्रता केन्द्र से पार है।
२२७. दर्पण में वक्रता त्रिज्या होती है।	ज्ञान दर्पण वक्रता त्रिज्या से पार है।
२२८. दर्पण में मुख्य अक्ष होता है।	ज्ञान दर्पण मुख्य अक्ष से पार है।
२२९. दर्पण में फोकस होता है।	ज्ञान दर्पण फोकस से पार है।
२३०. दर्पण में द्वारक होता है।	ज्ञान दर्पण द्वारक से पार है।
२३१. सम्पूर्ण दर्पण में नहीं, बल्कि एक समय की अवस्था में पदार्थ प्रतिबिम्बित होते हैं।	सम्पूर्ण ज्ञान दर्पण में नहीं, बल्कि एक समय की अवस्था में ज्ञेय प्रतिबिम्बित होते हैं।
२३२. दर्पण की उपासना निराली है।	ज्ञान दर्पण की उपासना निराली है।
२३३. दर्पण की अवस्थायें क्रम नियमित होती हैं।	ज्ञान दर्पण की अवस्थायें क्रम नियमित होती हैं।
२३४. एक दर्पण का दूसरे दर्पण में अन्योन्याभाव है।	एक ज्ञान दर्पण का दूसरे ज्ञान दर्पण में अत्यंताभाव है।
२३५. स्वयं को दर्पण में देखने से पर दोषारोपण की वृत्ति छूट जाती है।	स्वयं को ज्ञान दर्पण में देखने से पर दोषारोपण की वृत्ति छूट जाती है।
२३६. दूसरे पर उंगली उठाने से पहले खुद को दर्पण में देख लेना चाहिए।	दूसरे को समझाने से पहले स्वयं को ज्ञान दर्पण में देख लेना चाहिए।
२३७. योग्यता हो तो धन खर्च किये बिना भी दर्पण में पदार्थ का प्रतिबिम्ब पड़ सकता है।	योग्यता हो तो धन खर्च किये बिना भी ज्ञान दर्पण में पदार्थ का प्रतिबिम्ब पड़ सकता है।

२३८. अज्ञानी को दर्पण में राख की दीवार दिखते ही यह विचार नहीं करना पड़ता कि यही मैं हूँ।	ज्ञानी को ज्ञान दर्पण में शुद्धात्मा दिखते ही यह विचार नहीं करना पड़ता कि यही मैं हूँ।
२३९. दर्पण की प्राप्ति कर्मोदय के निमित्त से होती है।	ज्ञान दर्पण की अनुभूति स्वयं के पुरुषार्थ से होती है।
२४०. रागी देवी–देवता के दर्शन करने से दर्पण में देख लेना बेहतर है।	वीतरागी देव के दर्शन करने से ज्ञान दर्पण में देखना बेहतर है।
२४१. दर्पण कथंचित् वचनगोचर है।	ज्ञान दर्पण कथंचित् वचनगोचर है।
२४२. दर्पण कथंचित् वचन अगोचर है।	ज्ञान दर्पण कथंचित् वचन अगोचर है।
२४३. दर्पण को देखकर प्रेमी प्रेमपत्र लिखते हैं।	ज्ञान दर्पण को देखकर ज्ञानी शास्त्र लिखते हैं।
२४४. दर्पण को सत्युग से क्या लेना–देना?	ज्ञान दर्पण को सत्युग से क्या लेना–देना?
२४५. दर्पण को कलियुग से क्या लेना–देना?	ज्ञान दर्पण को कलियुग से क्या लेना–देना?
२४६. दर्पण और दीपक की जाति एक है।	ज्ञान दर्पण और ज्ञान दीपक की जाति एक है।
२४७. व्यवहार से देवद्रव्य दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।	निश्चय से देवद्रव्य ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।
२४८. दर्पण को जाना हो, तो दर्पण का ध्यान हो सकता है।	ज्ञान दर्पण को जाना हो, तो ज्ञान दर्पण का ध्यान हो सकता है।
२४९. दर्पण से बनी भगवान की मूर्ति जड़मूर्ति होती है।	ज्ञान दर्पण स्वरूप भगवान आत्मा स्वयं चैतन्यमूर्ति है।
२५०. दर्पण कामवेग से न्यारा है।	ज्ञान दर्पण कामवेग से न्यारा है।

२५१. दर्पण में देखने पर तुलनात्मक विकल्पों की परम्परा प्रारम्भ हो जाती है।	ज्ञान दर्पण में देखने पर समस्त विकल्पों की परम्परा रुक जाती है।
२५२. दर्पण पर का विज्ञान है।	ज्ञान दर्पण परम विज्ञान है।
२५३. दर्पण में लीन होकर मृत्यु की यात्रा करते हैं।	ज्ञान दर्पण में लीन होकर अमर पद की यात्रा करते हैं।
२५४. डायोजनिस ने सिकंदर को दर्पण दिया।	ज्ञानियों ने अज्ञानियों को ज्ञान दर्पण समझाया।
२५५. दर्पण का छोटा–सा टुकड़ा भी दर्पण ही है और स्वच्छ है।	ज्ञान दर्पण का एक प्रदेश भी ज्ञान दर्पण ही है और स्वच्छ है।
२५६. दर्पण पर खून के दाग लगे हों, तो उसे दूर कर देते हैं।	ज्ञान दर्पण को खून भरे मलिन देह से मुक्त कर देना चाहिए।
२५७. दर्पण में सूर्य प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण में असु प्रतिबिम्बित होता है।
२५८. दर्पण में एकत्व करने से मिथ्यात्व का पोषण होता है।	ज्ञान दर्पण में एकत्व करने से सम्यक्त्व प्रकट होता है।
२५९. दर्पण में एकत्व करने से अहंबुद्धि होती है।	ज्ञान दर्पण में एकत्व करने से अहंबुद्धि दूर होती है।
२६०. बिजली गिरने पर दर्पण नष्ट हो सकता है।	बिजली गिरने पर भी ज्ञान दर्पण अविनाशी रहता है।
२६१. भूकंप में भी दर्पण अलिप्त है।	भूकंप में भी ज्ञान दर्पण अलिप्त है।
२६२. सुनामी में भी दर्पण अलिप्त है।	सुनामी में भी ज्ञान दर्पण अलिप्त है।
२६३. मिट्टी में भी दर्पण तो दर्पण ही है।	देहरूपी मिट्टी में भी ज्ञान दर्पण तो ज्ञान दर्पण ही है।
२६४. विस्फोटक ध्वनि से दर्पण टूट सकता है।	विस्फोटक ध्वनि से ज्ञान दर्पण अटूट रहता है।

२६५. सागर में गिरे हुए दर्पण में सागर प्रतिबिम्बित होता है।

संसार सागर में गिरे हुए ज्ञान दर्पण में संसार सागर प्रतिबिम्बित होता है।

२६६. अत्यंत निकट रहने वाले दर्पण विपरीत दिशा में हों, तो अलग–अलग पदार्थ प्रतिबिम्बित होते हैं।

अत्यंत निकट रहने वाले ज्ञान दर्पण विपरीत दिशा में हों, तो अलग–अलग ज्ञेय प्रतिबिम्बित होते हैं।

२६७. बिना दर्पण का व्यक्ति, दर्पण के बिना भी अपना कार्य कर लेता है।

बिना ज्ञान दर्पण का देह, ज्ञान दर्पण के बिना भी अपना कार्य कर लेता है।

२६८. अज्ञानी को दर्पण में मुख दिखता है।

ज्ञानी को ज्ञान दर्पण में सुख दिखता है।

२६९. दर्पण अनासक्त होता है।

ज्ञान दर्पण अनासक्त होता है।

२७०. दर्पण अनाकुल है।

ज्ञान दर्पण अनाकुल है।

२७१. दर्पण की आदि है।

ज्ञान दर्पण अनादि है।

२७२. दर्पण का अंत है।

ज्ञान दर्पण अनंत है।

२७३. रूपी दर्पण की स्वच्छता ही स्व–पर के आकार का प्रतिभास करने वाली है और उष्णता तथा ज्वाला अग्नि की है।

अरूपी ज्ञान दर्पण की अपने को और पर को जानने वाली ज्ञातृता ही है और कर्म तथा नोकर्म पुद्गल के हैं।

२७४. दर्पण प्रतिबिम्बित पदार्थों से निर्लेप रहता है।

ज्ञान दर्पण प्रतिबिम्बित ज्ञेयों से निर्लेप रहता है।

२७५. इच्छा के बिना दर्पण का गमनागमन होता है।

इच्छा के बिना ज्ञान दर्पण का गमनागमन होता है।

२७६. दर्पण में लोक के पुद्गल ही प्रतिबिम्बित होते हैं।

केवल ज्ञान दर्पण में लोकालोक के ज्ञेय प्रतिबिम्बित होते हैं।

२७७. दर्पण का दृष्टांत समझाने के लिये है।

ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझने के लिये है।

२७८. कलश पर दर्पण शोभायमान होते हैं।

ज्ञान दर्पण स्वसुशोभित अमृत कलश है।

अस्ति-नास्ति अधिकार

२७९. दर्पण की परछांह होती है।	ज्ञान दर्पण की परछांह नहीं होती।
२८०. तिथि–दर्पण होता है।	ज्ञान दर्पण की कोई तिथि नहीं होती।
२८१. दर्पण की जन्मभूमि होती है।	ज्ञानदर्पण की जन्मभूमि नहीं होती।
२८२. दीवार पर दर्पण को टांगने के लिये कील या किसी साधन की आवश्यकता होती है।	राख की दीवार पर ज्ञान दर्पण को टांगने के लिये कील या किसी साधन की आवश्यकता नहीं होती है।
२८३. दर्पण जर्जरित होता है।	ज्ञान दर्पण जर्जरित नहीं होता है।
२८४. अज्ञानी चिंतित हैं, क्योंकि दर्पण पर लगे दाग को निकालने से दर्पण टूट सकता है।	ज्ञानी निश्चिंत हैं, क्योंकि ज्ञान दर्पण पर लगे दाग को निकालने से ज्ञान दर्पण कदापि टूट नहीं सकता।
२८५. दर्पण जमीन को छूता है।	ज्ञान दर्पण जमीन को छूता नहीं है।
२८६. दर्पण आसमान को छूता है।	ज्ञान दर्पण आसमान को छूता नहीं है।
२८७. दर्पण के आंशिक प्रदेश स्वच्छ हो सकते हैं।	ज्ञान दर्पण के आंशिक प्रदेश स्वच्छ नहीं हो सकते हैं।
२८८. दर्पण के आंशिक प्रदेश मलिन हो सकते हैं।	ज्ञान दर्पण के आंशिक प्रदेश मलिन नहीं हो सकते हैं।
२८९. मक्खी को दर्पण की स्पर्शना में रुचि है।	मिथ्यादृष्टी को ज्ञान दर्पण की स्पर्शना में रुचि नहीं है।

२९०. दर्पण साफ होने के बाद भी गंदा हो सकता है।	ज्ञान दर्पण निर्मल होने के बाद कदापि मलिन नहीं हो सकता।
२९१. दर्पण आता है।	ज्ञान दर्पण आता नहीं है।
२९२. दर्पण जाता है।	ज्ञान दर्पण जाता नहीं है।
२९३. दर्पण की यात्रा से जीवों की हिंसा होती है।	ज्ञान दर्पण की यात्रा से जीवों की हिंसा नहीं होती है।
२९४. दर्पण वैकल्पिक है।	ज्ञान दर्पण वैकल्पिक नहीं है।
२९५. दर्पण को चिपकाने का गोंद होता है।	ज्ञान दर्पण कदापि कटता नहीं, अतः चिपकाने का प्रश्न ही नहीं उठता।
२९६. दर्पण में लीन होने से ऊब पैदा हो सकती है।	ज्ञान दर्पण में लीन होने से कभी ऊब पैदा नहीं हो सकती।
२९७. दर्पण को यंत्र द्वारा स्केन किया जा सकता है।	ज्ञान दर्पण को यंत्र द्वारा स्केन नहीं किया जा सकता।
२९८. दर्पण में खालीपन है।	ज्ञान दर्पण में खालीपन नहीं है।
२९९. एक दर्पण में से अनेक दर्पण हो सकते हैं।	एक ज्ञान दर्पण में से अनेक ज्ञान दर्पण नहीं हो सकते।
३००. दर्पण को काटकर आधा करके उपयोग कर सकते हैं।	ज्ञान दर्पण को काटकर आधा करके उपयोग करने की बात तो दूर, काट ही नहीं सकते।
३०१. दर्पण पूर्व दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की पूर्व दिशा नहीं होती।
३०२. दर्पण पश्चिम दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की पश्चिम दिशा नहीं होती।
३०३. दर्पण उत्तर दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की उत्तर दिशा नहीं होती।
३०४. दर्पण दक्षिण दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की दक्षिण दिशा नहीं होती।

३०५. दर्पण आग्नेय दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की आग्नेय दिशा नहीं होती।
३०६. दर्पण नैऋत्य दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की नैऋत्य दिशा नहीं होती।
३०७. दर्पण वायव्य दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की वायव्य दिशा नहीं होती।
३०८. दर्पण ईशान दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की ईशान दिशा नहीं होती।
३०९. दर्पण ऊर्ध्व दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की ऊर्ध्व दिशा नहीं होती।
३१०. दर्पण अधो दिशा में हो सकता है।	ज्ञान दर्पण की अधो दिशा नहीं होती।
३११. दर्पण का चित्र बन सकता है।	ज्ञान दर्पण का चित्र नहीं बन सकता।
३१२. दर्पण का चलचित्र बन सकता है।	ज्ञान दर्पण का चलचित्र नहीं बन सकता।
३१३. वास्तुशास्त्र में दर्पण को प्रमुख स्थान दिया है।	ज्ञान दर्पण का वास्तु के साथ कोई संबंध नहीं है।
३१४. दर्पण परिग्रह है।	ज्ञान दर्पण परिग्रह नहीं है।
३१५. दर्पण में मध्य बिंदु होता है।	ज्ञान दर्पण में मध्य बिंदु नहीं होता है।
३१६. सपने में दर्पण दिखाई दे सकता है।	सपने में ज्ञान दर्पण दिखाई नहीं दे सकता।
३१७. दर्पण कभी दीवार था।	ज्ञान दर्पण कभी राख की दीवार नहीं था।
३१८. दर्पण कभी दीवार होगा।	ज्ञान दर्पण कभी राख की दीवार नहीं होगा।
३१९. दर्पण में चमक होती है।	ज्ञान दर्पण में चमक नहीं होती।
३२०. दर्पण का एक छोटा–सा टुकड़ा भी आँख में गिरे तो आँख फूट सकती है।	ज्ञान दर्पण का शरीर पर कोई असर नहीं होता।

३२१. दर्पण का उत्पाद एवं व्यय होता है।	ज्ञान दर्पण उत्पाद एवं व्यय से न्यारा ध्रुव है।
३२२. किसी चश्मे का कांच दर्पण का कार्य कर सकता है।	कोई भी अन्य द्रव्य ज्ञान दर्पण का कार्य नहीं कर सकता।
३२३. विकसित देशों में दर्पण को ही दीवार बनाया जाता है।	ज्ञान दर्पण को राख की दीवार नहीं बनाया जा सकता है।
३२४. दर्पण के बनने का समय होता है।	ज्ञान दर्पण के बनने का समय नहीं होता।
३२५. दर्पण में स्निग्धत्व होता है।	ज्ञान दर्पण में स्निग्धत्व नहीं होता।
३२६. दर्पण में रूक्षत्व होता है।	ज्ञान दर्पण में रूक्षत्व नहीं होता।
३२७. दर्पण को पकड़ सकते हैं।	ज्ञान दर्पण को पकड़ नहीं सकते।
३२८. दर्पण को छोड़ सकते हैं।	ज्ञान दर्पण को छोड़ नहीं सकते।
३२९. दर्पण पर तस्वीर को चिपकाया जा सकता है।	ज्ञान दर्पण पर तस्वीर को चिपकाया नहीं जा सकता।
३३०. दर्पण की प्राप्ति का प्रयास निष्फल जा सकता है।	ज्ञान दर्पण की प्राप्ति का प्रयास निष्फल नहीं जा सकता।
३३१. लंबे काल के बाद दर्पण घिस जाता है।	अनंत काल के बाद भी ज्ञान दर्पण घिसता नहीं है।
३३२. दर्पण दूर है।	ज्ञान दर्पण दूर नहीं है।
३३३. दर्पण का वारिस होता है।	ज्ञान दर्पण का वारिस नहीं होता है।
३३४. दर्पण पर श्रृंगार हो सकता है।	ज्ञान दर्पण पर श्रृंगार नहीं हो सकता।
३३५. दर्पण को काटने का यंत्र होता है।	ज्ञान दर्पण को काटने का यंत्र नहीं होता है।
३३६. दर्पण धुंधला हो सकता है।	ज्ञान दर्पण धुंधला नहीं होता है।

३३७. मकान में से दर्पण बाहर निकाल सकते हैं।	चैतन्य महल में से ज्ञान दर्पण बाहर नहीं निकाल सकते हैं।
३३८. मकान में पराया दर्पण लेकर अंदर जा सकते हैं।	चैतन्य महल में पराया ज्ञान दर्पण लेकर अंदर नहीं जा सकते हैं।
३३९. दर्पण की तस्वीर खींची जा सकती है।	ज्ञान दर्पण की तस्वीर नहीं खींची जा सकती।
३४०. दर्पण पर बरसात में ओले गिरे तो दर्पण फूट जाता है।	ज्ञान दर्पण पर बरसात में ओले गिरे तो भी ज्ञान दर्पण फूटता नहीं है।
३४१. दर्पण को पकड़कर उठाया जा सकता है।	ज्ञान दर्पण को पकड़कर उठाया नहीं जा सकता।
३४२. विमान में बैठने से पहले दर्पण की जांच होती है।	विमान में बैठने से पहले ज्ञान दर्पण की जांच नहीं होती।
३४३. दर्पण का वजन होता है।	ज्ञान दर्पण का वजन नहीं होता है।
३४४. दर्पण का उत्पादन हो सकता है।	ज्ञान दर्पण का उत्पादन नहीं हो सकता।
३४५. दर्पण का निर्यात हो सकता है।	ज्ञान दर्पण का निर्यात नहीं हो सकता।
३४६. दर्पण का आयात हो सकता है।	ज्ञान दर्पण का आयात नहीं हो सकता।
३४७. अतिशय सर्दी–गर्मी से दर्पण गल सकता है।	अतिशय सर्दी–गर्मी से ज्ञान दर्पण गल सकता नहीं।
३४८. दर्पण अवधिज्ञान का विषय बन सकता है।	ज्ञान दर्पण अवधिज्ञान का विषय नहीं बन सकता।
३४९. दर्पण मनःपर्ययज्ञान का विषय बन सकता है।	ज्ञान दर्पण मनःपर्ययज्ञान का विषय नहीं बन सकता।

३५०. दर्पण के समस्त प्रदेशों की सफाई क्रमशः होती है।	ज्ञान दर्पण के समस्त प्रदेशों की सफाई क्रमशः नहीं होती है।
३५१. अज्ञानी ने दर्पण में अनंत बार देखा।	अज्ञानी ने ज्ञान दर्पण में एक बार भी नहीं देखा।
३५२. दर्पण परदेसी होता है।	ज्ञान दर्पण परदेसी नहीं होता।
३५३. दर्पण को आयताकार लगाया जाता है।	ज्ञान दर्पण को आयताकार नहीं लगाया जाता।
३५४. दर्पण को वर्गाकार लगाया जाता है।	ज्ञान दर्पण को वर्गाकार नहीं लगाया जाता।
३५५. दर्पण नुकीला हो सकता है।	ज्ञान दर्पण नुकीला नहीं होता।
३५६. दर्पण में बाह्य पदार्थों को संग्रहित करने की चेष्टा से दर्पण टूट सकता है।	ज्ञान दर्पण में ज्ञेयों को संग्रहित करने की चेष्टा से ज्ञान दर्पण को कुछ नहीं होता, बस जीव का मिथ्यात्व पुष्ट होता है।
३५७. वास्तुशास्त्र के अनुसार दर्पण को पूर्व में लगाना चाहिए।	ज्ञान दर्पण को पूर्व दिशा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। ज्ञान दर्पण के आश्रय से अपूर्व दशा प्रकट होती है।
३५८. वास्तुशास्त्र के अनुसार दर्पण को उत्तर में लगाना चाहिए।	ज्ञान दर्पण को उत्तर दिशा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। ज्ञान दर्पण के आश्रय से उत्तरोत्तर वृद्धि एवं पूर्णता प्रकट होती है।
३५९. वास्तुशात्र के अनुसार दर्पण को पूर्व–उत्तर में लगाना चाहिए।	ज्ञान दर्पण की दशा का विकल्प भी स्वरूप की अनुभूति में बाधक है, तब दिशा के विकल्प का तो क्या कहना?
३६०. दर्पण का आकार सुख का कारण बनता है।	ज्ञान दर्पण का आकार सुख का कारण नहीं बनता।

नास्ति-अस्ति अधिकार

३६१. माता के गर्भ में दर्पण नहीं दिखाई दे सकता।	माता के गर्भ में ज्ञान दर्पण दिखाई दे सकता है।
३६२. शरीर में दर्पण नहीं होता है।	शरीर में ज्ञान दर्पण होता है।
३६३. रूपी दर्पण में अरूपी ज्ञान दर्पण प्रतिबिम्बित नहीं हो सकता है।	अरूपी ज्ञान दर्पण में रूपी दर्पण प्रतिबिम्बित हो सकता है।
३६४. दर्पण एवं दीवार एकक्षेत्रावगाही नहीं हैं।	ज्ञान दर्पण एवं राख की दीवार एकक्षेत्रावगाही हैं।
३६५. दर्पण अमर नहीं है।	ज्ञान दर्पण अमर है।
३६६. दर्पण को पदार्थों के झलकने का बोध नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को ज्ञेयों के झलकने का बोध होता है।
३६७. दर्पण स्वयं दर्पण में नहीं झलक सकता।	ज्ञान दर्पण में स्वयं ज्ञान दर्पण झलक सकता है।
३६८. दर्पण में श्रद्धा का रूप नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में श्रद्धा का रूप होता है।
३६९. दर्पण का समागम सत्समागम नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का समागम सत्समागम होता है।
३७०. युद्ध के मैदान में दर्पण नहीं होता।	युद्ध के मैदान में ज्ञान दर्पण होता है।
३७१. दर्पण लोक प्रमाण नहीं हो सकता।	ज्ञान दर्पण लोक प्रमाण हो सकता है।
३७२. ओमकार ध्वनि का केन्द्रबिंदु दर्पण नहीं है।	ओमकार ध्वनि का केन्द्रबिंदु ज्ञान दर्पण है।
३७३. रागादि भाव पुद्गल के परिणाम होने पर भी पुद्गल दर्पण में प्रतिबिम्बित नहीं होते हैं।	रागादि भाव आत्मा के परिणाम न होने पर भी ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं।
३७४. मैं दर्पण की क्रिया का स्वामी नहीं हूँ।	मैं ज्ञान दर्पण की क्रिया का स्वामी हूँ।

३७५. दर्पण में देखकर भोजन बनाया नहीं जा सकता।	ज्ञान दर्पण में देखकर भोजन बनाया जा सकता है।
३७६. दर्पण में देखकर भोजन किया नहीं जा सकता।	ज्ञान दर्पण में देखकर भोजन किया जा सकता है।
३७७. दर्पण की ओर ध्यान न जाने से अनंत दुःख नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण की ओर ध्यान न जाने से अनंत दुःख होता है।
३७८. जब तक दर्पण पर कपड़ा लिपटा हो, दर्पण पर धूल नहीं चिपकती है।	जब तक ज्ञान दर्पण पर शरीररूपी कपड़ा लिपटा हो, ज्ञान दर्पण पर कर्मों की धूल चिपकती है।
३७९. दर्पण को निराकार नहीं कहा है।	ज्ञान दर्पण को निराकार कहा है।
३८०. अतीन्द्रिय सुख दर्पण में प्रतिबिम्बित नहीं होता।	अतीन्द्रिय सुख ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।
३८१. इन्द्रिय सुख दर्पण में प्रतिबिम्बित नहीं होता।	इन्द्रिय सुख ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।
३८२. दर्पण का स्वरूप समझने के लिये कषाय की मंदता अनिवार्य नहीं है।	ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझने के लिये कषाय की मंदता अनिवार्य है।
३८३. दर्पण ज्ञानपुंज नहीं है।	ज्ञान दर्पण ज्ञानपुंज है।
३८४. दर्पण में प्राण नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में चैतन्य प्राण होता है।
३८५. दर्पण फूटने के बाद उसकी महिमा नहीं रहती।	ज्ञान दर्पण नहीं फूटने से उसकी महिमा सदैव रहती है।
३८६. दर्पण के विचार से दर्पण पर लगी धूल, दूर नहीं हो जाती।	ज्ञान दर्पण के विचार से ज्ञान दर्पण पर लगी मिथ्यात्व की धूल, दूर हो जाती है।
३८७. दर्पण की यथार्थ श्रद्धा से सम्यग्दर्शन नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण की यथार्थ श्रद्धा से सम्यग्दर्शन होता है।

३८८. दर्पण के यथार्थ ज्ञान से सम्यग्ज्ञान नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण के यथार्थ ज्ञान से सम्यग्ज्ञान होता है।
३८९. दर्पण में लीन होने से सम्यक्चारित्र नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण में लीन होने से सम्यक्चारित्र होता है।
३९०. कारागृहवासी अपराधी को दर्पण नहीं दिया जाता।	संसारी मिथ्यादृष्टी अपराधी स्वयं ज्ञान दर्पण है।
३९१. दर्पण में देखने के बाद दर्पण को स्मरण करने का कोई प्रयोजन नहीं है।	ज्ञान दर्पण में देखने के बाद ज्ञान दर्पण को स्मरण करने से ज्ञान दर्पण में स्थिरता का पुरूषार्थ तीव्र होता है।
३९२. दर्पण को देखने के बाद प्रत्येक पुद्गल में दर्पण के दर्शन नहीं होते।	ज्ञान दर्पण को देखने के बाद प्रत्येक आत्मा में ज्ञान दर्पण के दर्शन होते हैं।
३९३. दर्पण का मोक्ष नहीं हो सकता।	ज्ञान दर्पण त्रिकाल मुक्त है।
३९४. समस्त तत्त्व दर्पण में प्रतिबिम्बित नहीं होते।	समस्त तत्त्व ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं।
३९५. अनेक द्रव्य ऐसे हैं, जो दर्पण में प्रतिबिम्बित नहीं होते।	ऐसा कोई भी द्रव्य नहीं है, जो ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित नहीं होता।
३९६. मृत्यु के समय दर्पण का ध्यान न हो।	मृत्यु के समय ज्ञान दर्पण का ध्यान हो।
३९७. नारकी को दर्पण का अनुभव नहीं।	नारकी को ज्ञान दर्पण का अनुभव हो सकता है।
३९८. दर्पण अनंत काल तक स्थिर नहीं रह सकता है।	ज्ञान दर्पण अनंत काल तक स्थिर रह सकता है।
३९९. दर्पण तीन लोक में सर्वत्र नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण तीन लोक में सर्वत्र होता है।
४००. सम्यग्दृष्टी चक्रवर्ती को दर्पण अच्छा लगता है, परन्तु अपना नहीं।	सम्यग्दृष्टी चक्रवर्ती को ज्ञान दर्पण अपना लगता है और अच्छा भी लगता है।

४०१. रूपी दर्पण मैं नहीं हूँ।	अरूपी ज्ञान दर्पण मैं हूँ।
४०२. रूपी दर्पण मेरा नहीं है।	अरूपी ज्ञान दर्पण मेरा सामर्थ्य है।
४०३. रूपी दर्पण का कर्त्ता मैं नहीं हूँ।	अरूपी ज्ञान दर्पण का कर्त्ता मैं हूँ।
४०४. रूपी दर्पण का भोक्ता मैं नहीं हूँ।	अरूपी ज्ञान दर्पण का भोक्ता मैं हूँ।
४०५. दर्पण में चेहरा तो दिखता है, किरदार नहीं।	ज्ञान दर्पण में चेहरा तो दिखता ही है, किरदार भी दिखता है।
४०६. दर्पण में चेहरा दिखाई देता है, हृदय नहीं।	ज्ञान दर्पण में चेहरा और हृदय आदि सर्वस्व दिखाई देता है।
४०७. पत्नी दर्पण को देखे, तो पति को कोई ऐतराज नहीं होता।	पत्नी ज्ञान दर्पण को देखे, तो किसी पति को बहुत ऐतराज होता है।
४०८. सिद्धशिला पर दर्पण नहीं है।	सिद्धशिला पर ज्ञान दर्पण है।
४०९. अवतल दर्पण पलटकर उत्तल दर्पण नहीं हो जाता।	पेट में हवा जाने से ज्ञान दर्पण के प्रदेश बाहर की ओर फैलते हैं।
४१०. उत्तल दर्पण पलटकर अवतल दर्पण नहीं हो जाता।	पेट में से हवा बाहर जाने से ज्ञान दर्पण के प्रदेश अंदर की ओर सिकुड़ते हैं।
४११. दर्पण आज है, पता नहीं कल हो ना हो।	ज्ञान दर्पण आज है, सदैव है।
४१२. दर्पण का वर्णन आगम नहीं है।	ज्ञान दर्पण का वर्णन आगम है।
४१३. अरिहंत परमेष्ठी के पास दर्पण नहीं होता।	अरिहंत परमेष्ठी स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
४१४. सिद्ध परमेष्ठी के पास दर्पण नहीं होता।	सिद्ध परमेष्ठी स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
४१५. आचार्य परमेष्ठी के पास दर्पण नहीं होता।	आचार्य परमेष्ठी स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।

४१६. उपाध्याय परमेष्ठी के पास दर्पण नहीं होता।	उपाध्याय परमेष्ठी स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
४१७. साधु परमेष्ठी के पास दर्पण नहीं होता।	साधु परमेष्ठी स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
४१८. निर्धन के पास दर्पण नहीं होता है।	निगोदिया स्वयं ज्ञान दर्पण है।
४१९. दर्पण के टिकने की कोई गारंटी नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के सदैव टिकने की गारंटी है।
४२०. दर्पण में चित्र दिखता है, परन्तु चरित्र नहीं।	ज्ञान दर्पण में चित्र भी दिखता है और चरित्र भी दिखता है।

नास्ति-नास्ति अधिकार

४२१. दर्पण को दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पदार्थों में मोह नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण को ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले ज्ञेयों में मोह नहीं होता है।
४२२. दर्पण को दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पदार्थों में राग नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण को ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले ज्ञेयों में राग नहीं होता है।
४२३. दर्पण को दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पदार्थों में द्वेष नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण को ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले ज्ञेयों में द्वेष नहीं होता है।
४२४. आँख बन्द रखने पर दर्पण में स्वयं का चेहरा दिखाई नहीं देता है।	मिथ्यादृष्टी को ज्ञान दर्पण में निज चैतन्य स्वरूप दिखाई नहीं देता है।
४२५. दर्पण दीवार बन सकता है, खिड़की नहीं।	ज्ञान दर्पण ज्ञानरूपी खिड़की है, राख की दीवार नहीं।

४२६. दर्पण के आश्रय से होने वाली यात्रा भटकाये बिना न रहेगी।

ज्ञान दर्पण के आश्रय से होने वाली यात्रा सिद्धपुर पहुँचाये बिना न रहेगी।

४२७. अंधे को दर्पण की महिमा नहीं आती।

अज्ञान से अंधे अज्ञानी को ज्ञान दर्पण की महिमा नहीं आती।

४२८. दर्पण का स्वरूप समझ में न आये, तो दर्पण के स्वरूप के प्रति द्वेष मत करना।

ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझ में न आये, तो ज्ञान दर्पण के स्वरूप के प्रति द्वेष मत करना।

४२९. आँख बन्द रखने से दर्पण में होने वाला प्रतिबिम्ब मिट नहीं जाता।

दृष्टि बन्द रखने से ज्ञान दर्पण में होने वाला प्रतिबिम्ब मिट नहीं जाता।

४३०. अंधेरे के कारण दर्पण नष्ट नहीं हो जाता।

अज्ञान के अंधेरे के कारण ज्ञान दर्पण नष्ट नहीं हो जाता।

४३१. अखंड दर्पण में खंड का विकल्प नहीं होता।

अखंड ज्ञान दर्पण में खंड का विकल्प नहीं होता।

४३२. दर्पण में वंध्य–वंदक भाव नहीं होता।

ज्ञान दर्पण में वंध्य–वंदक भाव नहीं होता।

४३३. एक समय भी ऐसा नहीं होता, जब दर्पण में किसी का प्रतिबिम्ब न पड़े।

एक समय भी ऐसा नहीं होता, जब ज्ञान दर्पण में किसी का प्रतिबिम्ब न पड़े।

४३४. दर्पण का पदार्थों के साथ संकर दोष नहीं होता।

ज्ञान दर्पण का ज्ञेयों के साथ संकर दोष नहीं होता।

४३५. सम्यग्दर्शन प्रकट करने की जिज्ञासा दर्पण में मिल नहीं सकती।

सम्यग्दर्शन प्रकट करने की जिज्ञासा ज्ञान दर्पण में मिल नहीं सकती।

४३६. योग्यता न हो तो धन खर्च करने पर भी दर्पण में पदार्थ का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता।

योग्यता न हो तो धन खर्च करने पर भी ज्ञान दर्पण में पदार्थ का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ सकता।

४३७. पाप के प्रतिबिम्ब से दर्पण पापरूप परिणमित नहीं हो जाता।	पाप के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण पापरूप परिणमित नहीं हो जाता।
४३८. पुण्य के प्रतिबिम्ब से दर्पण पुण्यरूप परिणमित नहीं हो जाता।	पुण्य के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण पुण्यरूप परिणमित नहीं हो जाता।
४३९. दर्पण को भोगने से पुण्य नहीं बंधता।	ज्ञान दर्पण को भोगने से पुण्य नहीं बंधता।
४४०. तुम्हारे अंधेपन के कारण दर्पण का स्वरूप न दिखाई दे, तो दर्पण का निषेध मत करना।	तुम्हारे अंधेपन के कारण ज्ञान दर्पण का स्वरूप न दिखाई दे, तो ज्ञान दर्पण का निषेध मत करना।
४४१. दर्पण मंगल नहीं है।	निश्चय से ज्ञान दर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई मंगल नहीं है।
४४२. दर्पण उत्तम नहीं है।	निश्चय से ज्ञान दर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई उत्तम नहीं है।
४४३. दर्पण शरण नहीं है।	निश्चय से ज्ञान दर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई शरण नहीं है।
४४४. ऋतु के पलटने से दर्पण नहीं पलट जाता।	ऋतु के पलटने से ज्ञान दर्पण नहीं पलट जाता।
४४५. दर्पण को दिमाग नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को दिमाग नहीं होता।
४४६. दर्पण का व्याप्य–व्यापक भाव दर्पण के अतिरिक्त किसी अन्य द्रव्य में घटित नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण का व्याप्य–व्यापक भाव ज्ञान दर्पण के अतिरिक्त किसी अन्य द्रव्य में घटित नहीं होता है।
४४७. दर्पण आशीर्वाद मांगता नहीं है।	ज्ञान दर्पण आशीर्वाद मांगता नहीं है।

४४८. दर्पण आशीर्वाद देता नहीं है।

४४९. दर्पण पुरूष नहीं है।

४५०. दर्पण स्त्री नहीं है।

४५१. दर्पण नपुंसक नहीं है।

४५२. दर्पण वस्त्र नहीं पहनता।

४५३. दर्पण वस्त्र नहीं उतारता।

४५४. दर्पण को आश्चर्य नहीं होता।

४५५. दर्पण को पीड़ा नहीं होती।

४५६. दर्पण को रोग नहीं होता।

४५७. दर्पण को पसीना नहीं होता।

४५८. दर्पण पदार्थों का चयन नहीं करता है।

४५९. परिभ्रमण करने से दर्पण का स्वभाव परिवर्तित नहीं हो जाता।

४६०. सुवर्ण से मढ़े हुए दर्पण पर धूल लगी हो, तो सत्य प्रतिबिम्बित नहीं होता।

४६१. दर्पण पूज्य नहीं है।

४६२. दर्पण पूजक नहीं है।

४६३. दर्पण को दर्पण से दूर नहीं किया जा सकता।

४६४. दर्पण समीपवर्ती पदार्थों के प्रति राग नहीं करता है।

ज्ञान दर्पण आशीर्वाद देता नहीं है।

ज्ञान दर्पण पुरूष नहीं है।

ज्ञान दर्पण स्त्री नहीं है।

ज्ञान दर्पण नपुंसक नहीं है।

ज्ञान दर्पण वस्त्र नहीं पहनता।

ज्ञान दर्पण वस्त्र नहीं उतारता।

ज्ञान दर्पण को आश्चर्य नहीं होता।

ज्ञान दर्पण को पीड़ा नहीं होती।

ज्ञान दर्पण को रोग नहीं होता।

ज्ञान दर्पण को पसीना नहीं होता।

ज्ञान दर्पण ज्ञेयों का चयन नहीं करता है।

परिभ्रमण करने से ज्ञान दर्पण का स्वभाव परिवर्तित नहीं हो जाता।

सुवर्ण जैसी कान्ति वाले देह में स्थित ज्ञान दर्पण पर रागादि भावों की धूल हो, तो सत्य प्रतिबिम्बित नहीं होता।

ज्ञान दर्पण पूज्य नहीं है।

ज्ञान दर्पण पूजक नहीं है।

ज्ञान दर्पण को ज्ञान दर्पण से दूर नहीं किया जा सकता ।

ज्ञान दर्पण समीपवर्ती ज्ञेयों के प्रति राग नहीं करता है।

४६५. दर्पण दूरवर्ती पदार्थों के प्रति द्वेष नहीं करता है।
ज्ञान दर्पण दूरवर्ती ज्ञेयों के प्रति द्वेष नहीं करता है।

४६६. दर्पण किसी को शरण नहीं देता।
ज्ञान दर्पण किसी को शरण नहीं देता।

४६७. दर्पण किसी की शरण नहीं लेता।
ज्ञान दर्पण किसी की शरण नहीं लेता।

४६८. दर्पण को भोगने का निश्चित स्थान नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को भोगने का निश्चित स्थान नहीं होता।

४६९. दर्पण को भोगने का निश्चित काल नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को भोगने का निश्चित काल नहीं होता।

४७०. दर्पण की ओर नहीं देखने से दर्पण नष्ट नहीं हो जाता।
ज्ञान दर्पण की ओर नहीं देखने से ज्ञान दर्पण नष्ट नहीं हो जाता।

४७१. दर्पण को आकांक्षा नहीं होती।
ज्ञान दर्पण को आकांक्षा नहीं होती।

४७२. दर्पण को जुगुप्सा नहीं होती।
ज्ञान दर्पण को जुगुप्सा नहीं होती।

४७३. दर्पण को हर्ष नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को हर्ष नहीं होता।

४७४. दर्पण को शोक नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को शोक नहीं होता।

४७५. दर्पण को भय नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को भय नहीं होता।

४७६. दर्पण को विस्मय नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को विस्मय नहीं होता।

४७७. दर्पण पुण्य कर्म की वांछा नहीं करता।
ज्ञान दर्पण पुण्य कर्म की वांछा नहीं करता।

४७८. दर्पण पाप कर्म का विरोध नहीं करता।
ज्ञान दर्पण पाप कर्म का विरोध नहीं करता।

४७९. दर्पण किसी का शिष्य नहीं होता।
ज्ञान दर्पण किसी का शिष्य नहीं होता।

४८०. दर्पण किसी का गुरु नहीं होता।	ज्ञान दर्पण किसी का गुरु नहीं होता।
४८१. दर्पण का कोई शिष्य नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का कोई शिष्य नही होता।
४८२. दर्पण का कोई गुरु नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का कोई गुरु नहीं होता।
४८३. दर्पण आलसी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण आलसी नहीं होता।
४८४. दुनिया का चक्कर काटने पर भी दर्पण अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता।	चार गतियों में चौरासी के चक्कर काटने पर भी ज्ञान दर्पण अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता।
४८५. दर्पण दुःखी नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण दुःखी नहीं होता है।
४८६. दर्पण सुखी नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण सुखी नहीं होता है।
४८७. दर्पण किसी को मूर्ख नहीं बनाता।	ज्ञान दर्पण किसी को मूर्ख नहीं बनाता।
४८८. दर्पण को अष्टमी और चतुर्दशी से कोई प्रयोजन नहीं है।	ज्ञान दर्पण को अष्टमी और चतुर्दशी से कोई प्रयोजन नहीं है।
४८९. यदि पदार्थों की दर्पण में झलकने की तत्समय की योग्यता हो, तो कोई अंतराय नहीं आता।	यदि ज्ञेयों की ज्ञान दर्पण में झलकने की तत्समय की योग्यता हो, तो कोई अंतराय नहीं आता।
४९०. मिथ्यात्व के कारण दर्पण अपना नहीं हो जाता।	मिथ्यात्व के कारण ज्ञान दर्पण पराया नहीं हो जाता।
४९१. दर्पण शाकाहारी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण शाकाहारी नहीं होता।
४९२. दर्पण अशाकाहारी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण अशाकाहारी नहीं होता।
४९३. दर्पण बैठता नहीं है।	ज्ञान दर्पण बैठता नहीं है।

४९४. दर्पण खड़ा होता नहीं है।	ज्ञान दर्पण खड़ा होता नहीं है।
४९५. दर्पण सोता नहीं है।	ज्ञान दर्पण सोता नहीं है।
४९६. दर्पण उठता नहीं है।	ज्ञान दर्पण उठता नहीं है।
४९७. दर्पण को श्वास नहीं।	ज्ञान दर्पण को श्वास नहीं।
४९८. दर्पण को उच्छ्वास नहीं।	ज्ञान दर्पण को उच्छ्वास नहीं।
४९९. छोटे बच्चे को दर्पण नहीं दिखाते हैं।	गर्भकाल सहित आठ वर्ष के बच्चे को ज्ञान दर्पण के दर्शन नहीं होते हैं।
५००. दर्पण का बीमा नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण को बीमा की जरूरत नहीं होती है।
५०१. दर्पण को मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं होता।
५०२. दर्पण को सासादन सम्यक्त्व गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को सासादन सम्यक्त्व गुणस्थान नहीं होता।
५०३. दर्पण को सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान नहीं होता।
५०४. दर्पण को अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान नहीं होता।
५०५. दर्पण को देशविरत गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को देशविरत गुणस्थान नहीं होता।
५०६. दर्पण को प्रमत्तविरत गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को प्रमत्तविरत गुणस्थान नहीं होता।
५०७. दर्पण को अप्रमत्तविरत गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को अप्रमत्तविरत गुणस्थान नहीं होता।
५०८. दर्पण को अपूर्वकरण गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को अपूर्वकरण गुणस्थान नहीं होता।
५०९. दर्पण को अनिवृत्तिकरण गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को अनिवृत्तिकरण गुणस्थान नहीं होता।
५१०. दर्पण को सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान नहीं होता।

५११. दर्पण को उपशांतमोह गुणस्थान नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को उपशांतमोह गुणस्थान नहीं होता।

५१२. दर्पण को क्षीणमोह गुणस्थान नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को क्षीणमोह गुणस्थान नहीं होता।

५१३. दर्पण को सयोगकेवली गुणस्थान नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को सयोगकेवली गुणस्थान नहीं होता।

५१४. दर्पण को अयोगकेवली गुणस्थान नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को अयोगकेवली गुणस्थान नहीं होता।

५१५. दर्पण को गति मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को गति मार्गणास्थान नहीं है।

५१६. दर्पण को इन्द्रिय मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को इन्द्रिय मार्गणास्थान नहीं है।

५१७. दर्पण को काय मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को काय मार्गणास्थान नहीं है।

५१८. दर्पण को योग मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को योग मार्गणास्थान नहीं है।

५१९. दर्पण को वेद मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को वेद मार्गणास्थान नहीं है।

५२०. दर्पण को कषाय मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को कषाय मार्गणास्थान नहीं है।

५२१. दर्पण को ज्ञान मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को ज्ञान मार्गणास्थान नहीं है।

५२२. दर्पण को संयम मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को संयम मार्गणास्थान नहीं है।

५२३. दर्पण को दर्शन मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को दर्शन मार्गणास्थान नहीं है।

५२४. दर्पण को लेश्या मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को लेश्या मार्गणास्थान नहीं है।

५२५. दर्पण को भव्यत्व मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को भव्यत्व मार्गणास्थान नहीं है।

५२६. दर्पण को सम्यक्त्व मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को सम्यक्त्व मार्गणास्थान नहीं है।

५२७. दर्पण को संज्ञित्व मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को संज्ञित्व मार्गणास्थान नहीं है।

५२८. दर्पण को आहार मार्गणास्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को आहार मार्गणास्थान नहीं है।

५२९. दर्पण को अपर्याप्तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३०. दर्पण को अपर्याप्तक बादर एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक बादर एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३१. दर्पण को अपर्याप्तक द्विइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक द्विइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३२. दर्पण को अपर्याप्तक त्रिइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक त्रिइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३३. दर्पण को अपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३४. दर्पण को अपर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३५. दर्पण को अपर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अपर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३६. दर्पण को पर्याप्तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३७. दर्पण को पर्याप्तक बादर एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक बादर एकेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।

५३८. दर्पण को पर्याप्तक द्विइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।	ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक द्विइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
५३९. दर्पण को पर्याप्तक त्रिइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।	ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक त्रिइन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
५४०. दर्पण को पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।	ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
५४१. दर्पण को पर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।	ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
५४२. दर्पण को पर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।	ज्ञान दर्पण को पर्याप्तक संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवस्थान नहीं है।
५४३. दर्पण में स्पर्शनेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में स्पर्शनेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।
५४४. दर्पण में रसनेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में रसनेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।
५४५. दर्पण में घ्राणेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में घ्राणेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।
५४६. दर्पण में चक्षुरिन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में चक्षुरिन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।
५४७. दर्पण में कर्णेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में कर्णेन्द्रिय का प्रवेश नहीं होता।
५४८. दर्पण में मन का प्रवेश नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में मन का प्रवेश नहीं होता।
५४९. स्पर्शनेन्द्रिय का विषय दर्पण में कहीं नहीं है।	स्पर्शनेन्द्रिय का विषय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५०. रसनेन्द्रिय का विषय दर्पण में कहीं नहीं है।	रसनेन्द्रिय का विषय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५१. घ्राणेन्द्रिय का विषय दर्पण में कहीं नहीं है।	घ्राणेन्द्रिय का विषय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।

५५२. चक्षुरिन्द्रिय का विषय दर्पण में कहीं नहीं है।	चक्षुरिन्द्रिय का विषय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५३. कर्णेन्द्रिय का विषय दर्पण में कहीं नहीं है।	कर्णेन्द्रिय का विषय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५४. मन का विषय दर्पण में कहीं नहीं है।	मन का विषय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५५. स्पर्शनेन्द्रिय की विजय दर्पण में कहीं नहीं है।	स्पर्शनेन्द्रिय की विजय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५६. रसनेन्द्रिय की विजय दर्पण में कहीं नहीं है।	रसनेन्द्रिय की विजय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५७. घ्राणेन्द्रिय की विजय दर्पण में कहीं नहीं है।	घ्राणेन्द्रिय की विजय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५८. चक्षुरिन्द्रिय की विजय दर्पण में कहीं नहीं है।	चक्षुरिन्द्रिय की विजय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५५९. कर्णेन्द्रिय की विजय दर्पण में कहीं नहीं है।	कर्णेन्द्रिय की विजय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५६०. मन की विजय दर्पण में कहीं नहीं है।	मन की विजय ज्ञान दर्पण में कहीं नहीं है।
५६१. शौचालय और जिनालय में स्थित दर्पण के स्वभाव में कोई पक्षपात नहीं होता।	शौचालय में स्थित निगोदिया और सिद्धालय में स्थित सिद्ध के ज्ञान दर्पण के स्वभाव में कोई पक्षपात नहीं होता।
५६२. अग्नि के प्रतिबिम्ब से दर्पण गर्म नहीं होता है।	क्रोधादि अग्नि के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण विकाररूप परिणमित नहीं होता है।
५६३. दर्पण में अनंत पदार्थ झलकते हैं, परन्तु उससे दर्पण विकृत नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में अनंत ज्ञेय झलकते हैं, परन्तु उससे ज्ञान दर्पण विकृत नहीं होता।
५६४. दर्पण के विपरीत भाग पर पदार्थ प्रतिबिम्बित नहीं होते हैं।	ज्ञान दर्पण के विपरीत अज्ञान में ज्ञेय प्रतिबिम्बित नहीं होते हैं।

५६५. समतल दर्पण की लम्बाई से दर्पण का स्वभाव प्रभावित नहीं होता।

५६६. समतल दर्पण की चौड़ाई से दर्पण का स्वभाव प्रभावित नहीं होता।

५६७. दर्पण में कितने ही पदार्थ क्यों न झलकें, उनका बोझा दर्पण पर नहीं पड़ता।

५६८. शरीर बिखरने के कारण दर्पण दुःखी नहीं होता है।

५६९. दर्पण की जाति नहीं होती।

५७०. दर्पण का गोत्र नहीं होता।

५७१. दर्पण जैन नहीं होता।

५७२. दर्पण अजैन नहीं होता।

५७३. दर्पण को कुल नहीं, अतः कुल परंपरा नहीं।

५७४. दर्पण को कोई आग्रह नहीं होता।

५७५. दर्पण पुण्य के फल को नहीं भोगता।

५७६. दर्पण पाप के फल को नहीं भोगता।

५७७. जनाजे में दर्पण नहीं होता है।

५७८. दर्पण पदार्थों का हिसाब नहीं रखता।

५७९. दर्पण को लब्धि नहीं होती।

ज्ञान दर्पण के प्रदेशों के विस्तार से ज्ञान दर्पण का स्वभाव प्रभावित नहीं होता।

ज्ञान दर्पण के प्रदेशों के फैलाव से ज्ञान दर्पण का स्वभाव प्रभावित नहीं होता।

ज्ञान दर्पण में सम्पूर्ण लोकालोक क्यों न झलकें, उनका बोझा ज्ञान दर्पण पर नहीं पड़ता।

शरीर बिखरने के कारण ज्ञान दर्पण दुःखी नहीं होता है।

ज्ञान दर्पण की जाति नहीं होती।

ज्ञान दर्पण का गोत्र नहीं होता।

ज्ञान दर्पण जैन नहीं होता।

ज्ञान दर्पण अजैन नहीं होता।

ज्ञान दर्पण को कुल नहीं, अतः कुल परंपरा नहीं।

ज्ञान दर्पण को कोई आग्रह नहीं होता।

ज्ञान दर्पण पुण्य के फल को नहीं भोगता।

ज्ञान दर्पण पाप के फल को नहीं भोगता।

जनाजे में ज्ञान दर्पण नहीं होता है।

ज्ञान दर्पण ज्ञेयों का हिसाब नहीं रखता।

ज्ञान दर्पण को लब्धि नहीं होती।

५८०. दर्पण को उपलब्धि नहीं होती।	ज्ञान दर्पण को उपलब्धि नहीं होती।
५८१. दर्पण को संशय नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को संशय नहीं होता।
५८२. दर्पण को विपर्यय नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को विपर्यय नहीं होता।
५८३. दर्पण को अनध्यवसाय नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को अनध्यवसाय नहीं होता।
५८४. कारागृह में कैदी को दर्पण का दर्शन नहीं होता।	मिथ्यादृष्टी को ज्ञान दर्पण का दर्शन नहीं होता।
५८५. दर्पण की निंदा करने से दर्पण दुःखी नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण की निंदा करने से ज्ञान दर्पण दुःखी नहीं होता है।
५८६. दर्पण की प्रशंसा करने से दर्पण आनंदित नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण की प्रशंसा करने से ज्ञान दर्पण आनंदित नहीं होता है।
५८७. जिसप्रकार नीला, हरा और पीला आदि वर्णरूप भाव मोर के स्वयं के स्वभाव होने से मोर के द्वारा ही भाये जाते हैं, मोर में ही पाये जाते हैं; अतः वे मोर ही हैं; किन्तु दर्पण में प्रतिबिम्बरूप से दिखाई देनेवाले नीले, हरे, पीले आदि वर्णरूप भाव, दर्पण की स्वच्छता के विकारभाव से दर्पण द्वारा भाये जाने से, दर्पण में ही पाये जाने से, दर्पण ही हैं, मोर नहीं। दर्पण की अवस्थायें दर्पण की ही हैं, परद्रव्य और परभाव की नहीं।	मिथ्यादर्शन, अज्ञान, अविरति आदि पौद्गलिक कर्मरूपभाव अजीव के स्वयं के स्वभाव होने से अजीव द्वारा ही भाये जाते हैं, अजीव में ही पाये जाते हैं; अतः अजीव ही हैं; किन्तु पुद्गलकर्म के उदयानुसार आत्मा में उत्पन्न होनेवाले मिथ्यादर्शन, अज्ञान और असंयम आदि भाव चैतन्य के भाव होने से जीव के द्वारा ही भाये जाते हैं, जीव में पाये जाते हैं; अतः जीव ही है। ज्ञान दर्पण की अवस्थायें ज्ञान दर्पण की ही हैं, परद्रव्य और परभाव की नहीं।

५८८. दर्पण में दिखाई देनेवाला मोर, मोर है ही नहीं, वह तो दर्पण ही है।	ज्ञान दर्पण में झलकते विकार, विकार है ही नहीं, वह तो ज्ञान दर्पण ही है।
५८९. दर्पण के कार्य में किसी भी परद्रव्य की कोई प्रेरणा नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के कार्य में किसी भी परद्रव्य की कोई प्रेरणा नहीं होती।
५९०. पुतले में कांटे चुभने के प्रतिबिम्ब से दर्पण में कांटा नहीं चुभता।	देह में कांटे चुभने के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण में कांटा नहीं चुभता।
५९१. दर्पण का द्रव्य परावर्तन नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का द्रव्य परावर्तन नहीं होता।
५९२. दर्पण का क्षेत्र परावर्तन नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का क्षेत्र परावर्तन नहीं होता।
५९३. दर्पण का काल परावर्तन नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का काल परावर्तन नहीं होता।
५९४. दर्पण का भव परावर्तन नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का भव परावर्तन नहीं होता।
५९५. दर्पण का भाव परावर्तन नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का भाव परावर्तन नहीं होता।
५९६. दर्पण स्मरण नहीं करता।	ज्ञान दर्पण स्मरण नहीं करता।
५९७. दर्पण विस्मरण नहीं करता।	ज्ञान दर्पण विस्मरण नहीं करता।
५९८. दर्पण तर्क नहीं करता।	ज्ञान दर्पण तर्क नहीं करता।
५९९. दर्पण अनुमान नहीं करता।	ज्ञान दर्पण अनुमान नहीं करता।
६००. दर्पण में अनेक पदार्थ प्रतिबिम्बित हों, फिर भी दर्पण की संख्या एक से अनेक नहीं हो जाती।	ज्ञान दर्पण में अनेक ज्ञेय प्रतिबिम्बित हों, फिर भी ज्ञान दर्पण की संख्या एक से अनेक नहीं हो जाती।

६०१. दर्पण अच्छा नहीं है।
६०२. दर्पण बुरा नहीं है।
६०३. दर्पण नया नहीं है।
६०४. दर्पण पुराना नहीं है।
६०५. दर्पण पदार्थों में सुधार नहीं कर सकता।
६०६. दर्पण पदार्थों में बिगाड़ नहीं कर सकता।
६०७. आकाश में बने बादलों के साथ दर्पण का कोई सम्बन्ध नहीं होता।
६०८. दर्पण का अंक के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता।
६०९. मयुरासन पर विराजमान दर्पण मयुर नहीं हो जाता।
६१०. सिंहासन पर विराजमान दर्पण सिंह नहीं हो जाता।
६११. दर्पण दुकानदार का भी नहीं होता और ग्राहक का भी नहीं होता।
६१२. दर्पण का एक–एक प्रदेश छद्मस्थ के ज्ञान का विषय नहीं है।
६१३. दर्पण असंतोषी नहीं होता है।
६१४. दर्पण संतोषी नहीं होता है।
६१५. दर्पण में जोश नहीं होता।
६१६. दर्पण बेहोश नहीं होता।

ज्ञान दर्पण अच्छा नहीं है।
ज्ञान दर्पण बुरा नहीं है।
ज्ञान दर्पण नया नहीं है।
ज्ञान दर्पण पुराना नहीं है।
ज्ञान दर्पण ज्ञेयों में सुधार नहीं कर सकता।
ज्ञान दर्पण ज्ञेयों में बिगाड़ नहीं कर सकता।
पौद्गलिक देह के साथ ज्ञान दर्पण का कोई सम्बन्ध नहीं होता।
ज्ञान दर्पण का अंक के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता।
मयुर के देह में विराजमान ज्ञान दर्पण मयुर नहीं हो जाता।
सिंह के देह में विराजमान ज्ञान दर्पण सिंह नहीं हो जाता।
ज्ञान दर्पण भूतपूर्व देह का भी नहीं होता और भावि देह का भी नहीं होता।
ज्ञान दर्पण का एक–एक प्रदेश छद्मस्थ के ज्ञान का विषय नहीं है।
ज्ञान दर्पण असंतोषी नहीं होता है।
ज्ञान दर्पण संतोषी नहीं होता है।
ज्ञान दर्पण में जोश नहीं होता।
ज्ञान दर्पण बेहोश नहीं होता।

६१७. दर्पण भावना में बह नहीं जाता।
ज्ञान दर्पण भावना में बह नहीं जाता।

६१८. दर्पण से वाणी की आशा मत रखना।
ज्ञान दर्पण से वाणी की आशा मत रखना।

६१९. दर्पण में बिम्ब की दूरी से प्रतिबिम्ब की दूरी यथार्थ नहीं होती है।
ज्ञान दर्पण में बिम्ब की दूरी से प्रतिबिम्ब की दूरी यथार्थ नहीं होती है।

६२०. दर्पण में बिम्ब की ऊंचाई से प्रतिबिम्ब की ऊंचाई यथार्थ नहीं होती है।
ज्ञान दर्पण में बिम्ब की ऊंचाई से प्रतिबिम्ब की ऊंचाई यथार्थ नहीं होती है।

६२१. रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले फूल का स्पर्श दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकता।
ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पुद्गल का स्पर्श ज्ञान दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकता।

६२२. रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले फूल का रस दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकता।
ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पुद्गल का रस ज्ञान दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकता।

६२३. रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले फूल की गंध दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकती।
ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पुद्गल की गंध ज्ञान दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकती।

६२४. रूपी दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले फूल का वर्ण दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकता।
ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होने वाले पुद्गल का वर्ण ज्ञान दर्पण में प्रविष्ट नहीं हो सकता।

६२५. मोर की सुन्दर कला से रूपी दर्पण सुखी नहीं होता है।
अनुकूल संयोगों के झलकने से ज्ञान दर्पण सुखी नहीं होता है।

६२६. मोर की सुन्दर कला बन्द हो जाने से रूपी दर्पण दुःखी नहीं होता है।
प्रतिकूल संयोगों के झलकने से ज्ञान दर्पण दुःखी नहीं होता है।

६२७. दर्पण हठी नहीं है।
ज्ञान दर्पण हठी नहीं है।

६२८. दर्पण में वेश संबंधी कोई पक्षपात नहीं होता।
ज्ञान दर्पण में वेश संबंधी कोई पक्षपात नहीं होता।

६२९. मुर्दा जलता है, उसमें दर्पण नहीं जलता है।

६३०. दर्पण का ध्यान न करने पर भी दर्पण नष्ट नहीं हो जाता।

६३१. दर्पण की अवस्था का कर्त्ता कर्म नहीं हैं।

६३२. दांत गिरने के कारण दर्पण नहीं गिर जाता।

६३३. दर्पण पदार्थों पर अपना अधिकार नहीं जमाता।

६३४. पदार्थ दर्पण पर अपना अधिकार नहीं जमाते।

६३५. दर्पण दीवार का मित्र नहीं है।

६३६. दर्पण दीवार का शत्रु नहीं है।

६३७. दर्पण की प्रसंशा से दर्पण में कोई परिवर्तन नहीं आता।

६३८. दर्पण की निंदा से दर्पण में कोई परिवर्तन नहीं आता।

६३९. दर्पण साधक नहीं है।

६४०. दर्पण का दर्पण के साथ विवाह नहीं होता।

६४१. दर्पण की माता नहीं होती।

६४२. दर्पण के पिता नहीं होते।

६४३. दर्पण की संतान नहीं होती।

६२९. मुर्दा जलता है, उसमें ज्ञान दर्पण नहीं जलता है।

६३०. ज्ञान दर्पण का ध्यान न करने पर भी ज्ञान दर्पण नष्ट नहीं हो जाता।

६३१. ज्ञान दर्पण की अवस्था का कर्त्ता कर्म नहीं हैं।

६३२. दांत गिरने के कारण ज्ञान दर्पण नहीं गिर जाता।

६३३. ज्ञान दर्पण पदार्थों पर अपना अधिकार नहीं जमाता।

६३४. पदार्थ ज्ञान दर्पण पर अपना अधिकार नहीं जमाते।

६३५. ज्ञान दर्पण राख की दीवार का मित्र नहीं है।

६३६. ज्ञान दर्पण राख की दीवार का शत्रु नहीं है।

६३७. ज्ञान दर्पण की प्रसंशा से ज्ञान दर्पण में कोई परिवर्तन नहीं आता।

६३८. ज्ञान दर्पण की निंदा से ज्ञान दर्पण में कोई परिवर्तन नहीं आता।

६३९. ज्ञान दर्पण साधक नहीं है।

६४०. ज्ञान दर्पण का ज्ञान दर्पण के साथ विवाह नहीं होता।

६४१. ज्ञान दर्पण की माता नहीं होती।

६४२. ज्ञान दर्पण के पिता नहीं होते।

६४३. ज्ञान दर्पण की संतान नहीं होती।

६४४. दर्पण की बहिन नहीं होती।
ज्ञान दर्पण की बहिन नहीं होती।

६४५. दर्पण के भाई नहीं होते।
ज्ञान दर्पण के भाई नहीं होते।

६४६. दर्पण के रिश्तेदार नहीं होते।
ज्ञान दर्पण के रिश्तेदार नहीं होते।

६४७. दर्पण को आशा नहीं होती।
ज्ञान दर्पण को आशा नहीं होती।

६४८. दर्पण को निराशा नहीं होती।
ज्ञान दर्पण को निराशा नहीं होती।

६४९. दर्पण मूर्छित नहीं होता है।
ज्ञान दर्पण मूर्छित नहीं होता है।

६५०. मैं दर्पण के समीप नहीं जा सकता।
मैं ज्ञान दर्पण से दूर नहीं जा सकता।

६५१. दर्पण को जानते समय आँख ज्ञानरूप परिणमित नहीं होती।
ज्ञान दर्पण को जानते समय आँख ज्ञानरूप परिणमित नहीं होती।

६५२. दर्पण कामी नहीं होता।
ज्ञान दर्पण कामी नहीं होता।

६५३. दर्पण भोगी नहीं होता।
ज्ञान दर्पण भोगी नहीं होता।

६५४. दर्पण जीतता नहीं है।
ज्ञान दर्पण जीतता नहीं है।

६५५. दर्पण हारता नहीं है।
ज्ञान दर्पण हारता नहीं है।

६५६. दर्पण में इच्छा का प्रवेश नहीं होता।
ज्ञान दर्पण में इच्छा का प्रवेश नहीं होता।

६५७. दर्पण में इच्छानिरोध का प्रवेश नहीं होता।
ज्ञान दर्पण में इच्छानिरोध का प्रवेश नहीं होता।

६५८. दर्पण किसी को सलाह नहीं देता।
ज्ञान दर्पण किसी को सलाह नहीं देता।

६५९. दर्पण किसी से सलाह नहीं लेता।
ज्ञान दर्पण किसी से सलाह नहीं लेता।

६६०. दर्पण अनशन नहीं करता।
ज्ञान दर्पण अनशन नहीं करता।

६६१. कृष्ण वर्ण के प्रतिबिम्ब से दर्पण कृष्ण नहीं हो जाता।	कृष्ण लेश्या के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण कृष्ण नहीं हो जाता।
६६२. नील वर्ण के प्रतिबिम्ब से दर्पण नील नहीं हो जाता।	नील लेश्या के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण नील नहीं हो जाता।
६६३. कापोत वर्ण के प्रतिबिम्ब से दर्पण कापोत नहीं हो जाता।	कापोत लेश्या के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण कापोत नहीं हो जाता।
६६४. पीत वर्ण के प्रतिबिम्ब से दर्पण पीत नहीं हो जाता।	पीत लेश्या के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण पीत नहीं हो जाता।
६६५. पद्म वर्ण के प्रतिबिम्ब से दर्पण पद्म नहीं हो जाता।	पद्म लेश्या के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण पद्म नहीं हो जाता।
६६६. शुक्ल वर्ण के प्रतिबिम्ब से दर्पण शुक्ल नहीं हो जाता।	शुक्ल लेश्या के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण शुक्ल नहीं हो जाता।
६६७. दर्पण की स्वच्छता का अवसर्पिणी काल के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।	ज्ञान दर्पण की स्वच्छता का अवसर्पिणी काल के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।
६६८. दर्पण की स्वच्छता का उत्सर्पिणी काल के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।	ज्ञान दर्पण की स्वच्छता का उत्सर्पिणी काल के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।
६६९. दर्पण मुमुक्षु नहीं होता।	ज्ञान दर्पण मुमुक्षु नहीं होता।
६७०. दर्पण दीक्षा ग्रहण नहीं करता।	ज्ञान दर्पण दीक्षा ग्रहण नहीं करता।
६७१. दर्पण दीक्षा का त्याग नहीं करता।	ज्ञान दर्पण दीक्षा का त्याग नहीं करता।
६७२. दर्पण पदार्थ को ग्रहण करने का विकल्प नहीं करता।	ज्ञान दर्पण ज्ञेय को ग्रहण करने का विकल्प नहीं करता।
६७३. दर्पण पदार्थ को त्याग करने का विकल्प नहीं करता।	ज्ञान दर्पण ज्ञेय को त्याग करने का विकल्प नहीं करता।

६७४. दर्पण पर उपसर्ग नहीं आता। — ज्ञान दर्पण पर उपसर्ग नहीं आता।

६७५. दर्पण पर परिषह नहीं आता। — ज्ञान दर्पण पर परिषह नहीं आता।

६७६. दर्पण उपसर्ग को सहन नहीं करता। — ज्ञान दर्पण उपसर्ग को सहन नहीं करता।

६७७. दर्पण परिषह को सहन नहीं करता। — ज्ञान दर्पण परिषह को सहन नहीं करता।

६७८. दर्पण पर मक्खी, मच्छर आदि जीव–जंतु बैठें, फिर भी दर्पण विरोध नहीं करता है। — ज्ञान दर्पण की मस्ती में मस्त मुनिराजों पर मक्खी, मच्छर आदि जीव–जंतु बैठें, फिर भी वे विरोध नहीं करते हैं।

६७९. दर्पण भवन–उपवन–वन में पक्षपात नहीं करता। — ज्ञान दर्पण भवन–उपवन–वन में पक्षपात नहीं करता।

६८०. सांप का ज़हर कदापि रूपी दर्पण में मिलता नहीं। — राग का ज़हर कदापि ज्ञान दर्पण में मिलता नहीं।

६८१. दर्पण अपराध नहीं करता। — ज्ञान दर्पण अपराध नहीं करता।

६८२. दर्पण प्रतिक्रमण नहीं करता। — ज्ञान दर्पण प्रतिक्रमण नहीं करता।

६८३. दर्पण आलोचना नहीं करता। — ज्ञान दर्पण आलोचना नहीं करता।

६८४. दर्पण प्रत्याख्यान नहीं करता। — ज्ञान दर्पण प्रत्याख्यान नहीं करता।

६८५. दर्पण अणुव्रत नहीं करता है। — ज्ञान दर्पण अणुव्रत नहीं करता है।

६८६. दर्पण महाव्रत नहीं करता है। — ज्ञान दर्पण महाव्रत नहीं करता है।

६८७. दर्पण आर्य भूमि पर राग नहीं करता। — ज्ञान दर्पण आर्य भूमि पर राग नहीं करता।

६८८. दर्पण आर्य भूमि पर द्वेष नहीं करता।
ज्ञान दर्पण आर्य भूमि पर द्वेष नहीं करता।

६८९. दर्पण म्लेच्छ भूमि पर राग नहीं करता।
ज्ञान दर्पण म्लेच्छ भूमि पर राग नहीं करता।

६९०. दर्पण म्लेच्छ भूमि पर द्वेष नहीं करता।
ज्ञान दर्पण म्लेच्छ भूमि पर द्वेष नहीं करता।

६९१. दर्पण को आर्यभूमि के साथ कोई संबंध नहीं है।
ज्ञान दर्पण को आर्यभूमि के साथ कोई संबंध नहीं है।

६९२. दर्पण को म्लेच्छ भूमि के साथ कोई संबंध नहीं है।
ज्ञान दर्पण को म्लेच्छ भूमि के साथ कोई संबंध नहीं है।

६९३. दर्पण को सिद्धक्षेत्र के साथ कोई संबंध नहीं है।
ज्ञान दर्पण को सिद्धक्षेत्र के साथ कोई संबंध नहीं है।

६९४. दर्पण को तीर्थक्षेत्र के साथ कोई संबंध नहीं है।
ज्ञान दर्पण को तीर्थक्षेत्र के साथ कोई संबंध नहीं है।

६९५. दर्पण को अतिशयक्षेत्र के साथ कोई संबंध नहीं है।
ज्ञान दर्पण को अतिशयक्षेत्र के साथ कोई संबंध नहीं है।

६९६. दर्पण का प्रक्षाल नहीं होता।
ज्ञान दर्पण का प्रक्षाल नहीं होता।

६९७. दर्पण का अभिषेक नहीं होता।
ज्ञान दर्पण का अभिषेक नहीं होता।

६९८. दर्पण के सामने प्रार्थना नहीं करते।
ज्ञान दर्पण के सामने प्रार्थना नहीं करते।

६९९. दर्पण के सामने पूजा नहीं करते।
ज्ञान दर्पण के सामने पूजा नहीं करते।

७००. दर्पण के सामने भक्ति नहीं करते।
ज्ञान दर्पण के सामने भक्ति नहीं करते।

७०१. दर्पण किसी की प्रार्थना नहीं सुनता।
ज्ञान दर्पण किसी की प्रार्थना नहीं सुनता।

७०२. दर्पण किसी की पूजा में रुचि नहीं लेता।
ज्ञान दर्पण किसी की पूजा में रुचि नहीं लेता।

७०३. दर्पण किसी की भक्ति में रस नहीं लेता।	ज्ञान दर्पण किसी की भक्ति में रस नहीं लेता।
७०४. दर्पण निश्चयाभासी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण निश्चयाभासी नहीं होता।
७०५. दर्पण व्यवहाराभासी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण व्यवहाराभासी नहीं होता।
७०६. दर्पण उभयाभासी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण उभयाभासी नहीं होता।
७०७. दर्पण में कुछ भी अचानक प्रतिबिम्बित नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में कुछ भी अचानक प्रतिबिम्बित नहीं होता।
७०८. यदि दर्पण न होता, देह का सौंदर्य कौन बताता?	यदि ज्ञान दर्पण न होता, आत्मा का सौंदर्य कौन बताता?
७०९. दर्पण का चिंतन करने वाले लोगों की भीड़ नहीं होती।	ज्ञान दर्पण का चिंतन करने वाले लोगों की भीड़ नहीं होती।
७१०. दर्पण के कार्य की कभी छुट्टी नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के कार्य की कभी छुट्टी नहीं होती।
७११. एक दर्पण दूसरे दर्पण के कार्य में कोई हस्तक्षेप नहीं करता।	एक ज्ञान दर्पण दूसरे ज्ञान दर्पण के कार्य में कोई हस्तक्षेप नहीं करता।
७१२. दर्पण ध्वनि का संग्रह नहीं करता।	ज्ञान दर्पण ध्वनि का संग्रह नहीं करता।
७१३. दर्पण बिमार नहीं होता।	ज्ञान दर्पण बिमार नहीं होता।
७१४. दर्पण दीवार को चलाता नहीं है।	ज्ञान दर्पण राख की दीवार को चलाता नहीं है।
७१५. दर्पण दीवार को रोकता नहीं है।	ज्ञान दर्पण राख की दीवार को रोकता नहीं है।
७१६. दर्पण को स्वप्न नहीं आते।	ज्ञान दर्पण को स्वप्न नहीं आते।
७१७. दर्पण उधार नहीं रखता।	ज्ञान दर्पण उधार नहीं रखता।
७१८. दर्पण की निरूपक किताब से दर्पण का सर्वांग रूप समझ में नहीं आ सकता।	ज्ञान दर्पण के निरूपक शास्त्रों से ज्ञान दर्पण का सर्वांग स्वरूप समझ में नहीं आ सकता।

७१९. दर्पण को कभी थकान नहीं लगती।	ज्ञान दर्पण को कभी थकान नहीं लगती।
७२०. दर्पण की जयकार नहीं पुकारी जाती।	ज्ञान दर्पण की जयकार नहीं पुकारी जाती।
७२१. दर्पण दान देता नहीं है।	ज्ञान दर्पण दान देता नहीं है।
७२२. दर्पण दान लेता नहीं है।	ज्ञान दर्पण दान लेता नहीं है।
७२३. दर्पण किसी का इंतज़ार नहीं करता।	ज्ञान दर्पण किसी का इंतज़ार नहीं करता।
७२४. दर्पण किसी को इंतज़ार नहीं कराता।	ज्ञान दर्पण किसी को इंतज़ार नहीं कराता।
७२५. दर्पण का जन्मोत्सव नहीं मनाया जाता।	ज्ञान दर्पण का जन्मोत्सव नहीं मनाया जाता।
७२६. दर्पण के लिये आँसू मत बहाना।	ज्ञान दर्पण के लिये आँसू मत बहाना।
७२७. दर्पण की कल्पना दर्पण नहीं है।	ज्ञान दर्पण की कल्पना ज्ञान दर्पण नहीं है।
७२८. दर्पण की अनुभूति अपूर्व नहीं है।	ज्ञान दर्पण की अनुभूति अपूर्व नहीं है।
७२९. दर्पण मजबूर नहीं है।	ज्ञान दर्पण मजबूर नहीं है।
७३०. दो रूपी दर्पण में एक–दूसरे का प्रतिबिम्ब झलकने से दो दर्पण मिलकर एक नहीं हो जाते।	दो अरूपी ज्ञान दर्पण में एक–दूसरे का प्रतिबिम्ब झलकने से दो ज्ञान दर्पण मिलकर एक नहीं हो जाते।
७३१. दर्पण अपना ही कार्य करता है, पराये का नहीं।	ज्ञान दर्पण अपना ही कार्य करता है, पराये का नहीं।
७३२. दर्पण किसी की शिकायत नहीं करता।	ज्ञान दर्पण किसी की शिकायत नहीं करता।
७३३. दर्पण किसी के साथ खेलता नहीं है।	ज्ञान दर्पण किसी के साथ खेलता नहीं है।
७३४. दर्पण का उपभोग न करने से दर्पण दुःखी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का उपभोग न करने से ज्ञान दर्पण दुःखी नहीं होता।

७३५. दर्पण का उपभोग करने से दर्पण सुखी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का उपभोग करने से ज्ञान दर्पण सुखी नहीं होता।
७३६. दर्पण देखते समय उसके प्रदेशों के भेद का विकल्प नहीं होता।	ज्ञान दर्पण देखते समय उसके प्रदेशों के भेद का विकल्प नहीं होता।
७३७. मैं दर्पण नहीं हूँ, ऐसा विकल्प भी आत्मानुभूति के काल में नहीं होता।	मैं ज्ञान दर्पण हूँ, ऐसा विकल्प भी आत्मानुभूति के काल में नहीं होता।
७३८. दर्पण का अस्तित्व स्वप्न मात्र नहीं है।	ज्ञान दर्पण का अस्तित्व स्वप्न मात्र नहीं है।
७३९. बहते पानी का प्रवाह दर्पण में कहीं भी नहीं होता।	बहते विकल्पों का प्रवाह ज्ञान दर्पण में कहीं भी नहीं होता।
७४०. प्रतिबिम्बित पदार्थ के वजन के कारण दर्पण पर कोई बोझ नहीं आता।	प्रतिबिम्बित ज्ञेय के वजन के कारण ज्ञान दर्पण पर कोई बोझ नहीं आता।
७४१. दर्पण में प्रशम नहीं है।	ज्ञान दर्पण में प्रशम नहीं है।
७४२. दर्पण में संवेग नहीं है।	ज्ञान दर्पण में संवेग नहीं है।
७४३. दर्पण में अनुकंपा नहीं है।	ज्ञान दर्पण में अनुकंपा नहीं है।
७४४. दर्पण को आस्तिक्य से कोई प्रयोजन नहीं है।	ज्ञान दर्पण को आस्तिक्य से कोई प्रयोजन नहीं है।
७४५. दर्पण किसी से डरता नहीं है।	ज्ञान दर्पण किसी से डरता नहीं है।
७४६. दर्पण किसी को डराता नहीं है।	ज्ञान दर्पण किसी को डराता नहीं है।
७४७. दर्पण को जेटलेग नहीं लगता।	ज्ञान दर्पण को जेटलेग नहीं लगता।
७४८. जाल में फंसा दर्पण अपनी स्वच्छता नहीं छोड़ता।	विकल्पों की जाल में फंसा ज्ञान दर्पण अपनी स्वच्छता नहीं छोड़ता।
७४९. दर्पण कभी आकुलित नहीं होता।	ज्ञान दर्पण कभी आकुलित नहीं होता।

७५०. दर्पण को कर्करोग नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को कर्करोग नहीं होता।
७५१. वनस्पति में छिपा हुआ दर्पण अज्ञानी को दिखाई नहीं देता।	निगोद में छिपा हुआ ज्ञान दर्पण अज्ञानी को दिखाई नहीं देता।
७५२. परदेस के दर्पण में स्वयं का रूप दिखने से मूल्य नहीं चुकाना पड़ता।	पर जीवों के ज्ञान दर्पण में स्वयं का रूप दिखने से मूल्य नहीं चुकाना पड़ता।
७५३. दर्पण तीर्थयात्रा नहीं करता।	ज्ञान दर्पण तीर्थयात्रा नहीं करता।
७५४. दर्पण में परिणाम नहीं होते हैं।	ज्ञान दर्पण में परिणाम नहीं होते हैं।
७५५. दर्पण में अभिप्राय नहीं होता है।	ज्ञान दर्पण में अभिप्राय नहीं होता है।
७५६. दर्पण को भूख नहीं लगती।	ज्ञान दर्पण को भूख नहीं लगती।
७५७. दर्पण को प्यास नहीं लगती।	ज्ञान दर्पण को प्यास नहीं लगती।
७५८. दर्पण पर पदार्थ का निशान नहीं रह जाता।	ज्ञान दर्पण पर ज्ञेय का निशान नहीं रह जाता।
७५९. शरीर साथ न दे, तो दर्पण पर आरोप नहीं लगाना चाहिए।	शरीर साथ न दे, तो ज्ञान दर्पण पर आरोप नहीं लगाना चाहिए।
७६०. दर्पण भावुक नहीं होता।	ज्ञान दर्पण भावुक नहीं होता।
७६१. दर्पण किसी भी प्रपंच में नहीं पड़ता।	ज्ञान दर्पण किसी भी प्रपंच में नहीं पड़ता।
७६२. दर्पण में झुर्रियाँ नहीं पड़तीं।	ज्ञान दर्पण में झुर्रियाँ नहीं पड़तीं।
७६३. दर्पण में संस्कार नहीं होते।	ज्ञान दर्पण में संस्कार नहीं होते।
७६४. दर्पण में फोड़ा नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में फोड़ा नहीं होता।
७६५. करुणा दर्पण का स्वभाव नहीं है।	करुणा ज्ञान दर्पण का स्वभाव नहीं है।

७६६. दर्पण किसी को भेंट देता नहीं है।
ज्ञान दर्पण किसी को भेंट देता नहीं है।

७६७. दर्पण किसी से भेंट लेता नहीं है।
ज्ञान दर्पण किसी से भेंट लेता नहीं है।

७६८. इस रचना की पूर्णता में दर्पण किंचित् आनंदित नहीं हो रहा है।
इस रचना की पूर्णता में ज्ञान दर्पण किंचित् आनंदित नहीं हो रहा है।

७६९. देह क्षीण होने से दर्पण क्षीण नहीं होता।
देह क्षीण होने से ज्ञान दर्पण क्षीण नहीं होता।

७७०. दर्पण में प्रतिबिम्बित मलिन दाग दर्पण में से नहीं आये होते।
ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित विकारी भावों के दाग ज्ञान दर्पण में से नहीं आये होते।

७७१. दर्पण साथी की खोज नहीं करता।
ज्ञान दर्पण साथी की खोज नहीं करता।

७७२. यदि प्रकाश नहीं होता, तो दर्पण की खोज नहीं होती।
यदि ज्ञान प्रकाश नहीं होता, तो ज्ञान दर्पण की खोज नहीं होती।

७७३. दर्पण को कर्मों का आश्रव नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को कर्मों का आश्रव नहीं होता।

७७४. दर्पण को कर्मों का बंध नहीं होता।
ज्ञान दर्पण को कर्मों का बंध नहीं होता।

७७५. दर्पण में पीड़ा का प्रवेश संभव नहीं है।
ज्ञान दर्पण में पीड़ा का प्रवेश संभव नहीं है।

७७६. दर्पण पदार्थों को सहन नहीं करता।
ज्ञान दर्पण ज्ञेयों को सहन नहीं करता।

७७७. सागर में डूबने वाले प्राणियों के पास दर्पण में देखने की फुरसत नहीं होती।
संसार सागर में डूबने वाले जीवों के पास ज्ञान दर्पण में देखने की फुरसत नहीं होती।

७७८. दर्पण झुकता नहीं है।
ज्ञान दर्पण झुकता नहीं है।

७७९. दर्पण द्रोह नहीं करता।
ज्ञान दर्पण द्रोह नहीं करता।

७८०. दर्पण घृणा नहीं करता।
ज्ञान दर्पण घृणा नहीं करता।

७८१. दर्पण मांस को धोता नहीं है।
ज्ञान दर्पण मांस को धोता नहीं है।

७८२. मांस के ढ़ेर में दर्पण नहीं रखा जाता।
मांस के ढ़ेर में ज्ञान दर्पण नहीं रखा जाता।

७८३. जिन्हें सोना हो, वे दर्पण में न देखें।
जिन्हें सोना हो, वे ज्ञान दर्पण में न देखें।

७८४. दर्पण को यात्रा करने के लिए धन खर्च नहीं करना पड़ता।
ज्ञान दर्पण को यात्रा करने के लिए धन खर्च नहीं करना पड़ता।

७८५. दर्पण भूतकाल के स्मरण में उलझता नहीं है।
ज्ञान दर्पण भूतकाल के स्मरण में उलझता नहीं है।

७८६. दर्पण भविष्यकाल की कल्पना में उलझता नहीं है।
ज्ञान दर्पण भविष्यकाल की कल्पना में उलझता नहीं है।

७८७. दर्पण के स्वरूप में गुण–गुणी का भेद नहीं होता।
ज्ञान दर्पण के स्वरूप में गुण–गुणी का भेद नहीं होता।

७८८. दर्पण में कोलाहल का प्रवेश नहीं होता।
ज्ञान दर्पण में विकल्पों के कोलाहल का प्रवेश नहीं होता।

७८९. दर्पण किसी से कुछ मांगता नहीं है।
ज्ञान दर्पण किसी से कुछ मांगता नहीं है।

७९०. दर्पण किसी को कुछ देता नहीं है।
ज्ञान दर्पण किसी को कुछ देता नहीं है।

७९१. दर्पण हंसता नहीं है।
ज्ञान दर्पण हंसता नहीं है।

७९२. दर्पण रोता नहीं है।
ज्ञान दर्पण रोता नहीं है।

७९३. दर्पण में पदार्थ संग्रहित नहीं होते।
ज्ञान दर्पण में ज्ञेय संग्रहित नहीं होते।

७९४. बच्चा गर्भ में नौ माह तक दर्पण को नहीं देख सकता।
अज्ञानी मनुष्य आठ वर्ष तक ज्ञान दर्पण को नहीं देख सकता।

७९५. दर्पण कभी पदार्थों से ऊब नहीं जाता है।
ज्ञान दर्पण कभी ज्ञेयों से ऊब नहीं जाता है।

७९६. दर्पण पदार्थों को ढूंढता नहीं है।	ज्ञान दर्पण ज्ञेयों को ढूंढता नहीं है।
७९७. दर्पण पर धूल लगी हो, फिर भी दर्पण का प्रतिबिम्बित करने का स्वभाव छूट नहीं जाता।	ज्ञान दर्पण के साथ राग–द्वेष के भाव हो, फिर भी ज्ञान दर्पण का जानने का स्वभाव छूट नहीं जाता।
७९८. जब कोई पदार्थ अपने दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है, तब हम पदार्थ के मालिक नहीं हो जाते।	जब कोई ज्ञेय आत्मा के ज्ञान दर्पण में जानने में आता है, तब आत्मा ज्ञेय का स्वामी नहीं हो जाता।
७९९. दर्पण का अस्तित्व किसी परपदार्थों के आधीन नहीं है।	ज्ञान दर्पण का अस्तित्व किसी परज्ञेयों के आधीन नहीं है।
८००. धूल दर्पण में मिल नहीं जाती।	राग ज्ञान दर्पण में मिल नहीं जाता।
८०१. कर्मों की सत्ता दर्पण में कहीं भी नहीं है।	कर्मों की सत्ता ज्ञान दर्पण में कहीं भी नहीं है।
८०२. दर्पण का कर्मोदय के साथ कोई संबंध नहीं।	ज्ञान दर्पण का कर्मोदय के साथ कोई संबंध नहीं।
८०३. दर्पण का कर्मों की उदीरणा के साथ कोई संबंध नहीं।	ज्ञान दर्पण का कर्मों की उदीरणा के साथ कोई संबंध नहीं।
८०४. दर्पण का कर्मों के उत्कर्षण के साथ कोई संबंध नहीं।	ज्ञान दर्पण का कर्मों के उत्कर्षण के साथ कोई संबंध नहीं।
८०५. दर्पण का कर्मों के अपकर्षण के साथ कोई संबंध नहीं।	ज्ञान दर्पण का कर्मों के अपकर्षण के साथ कोई संबंध नहीं।
८०६. दर्पण का कर्मों के संक्रमण के साथ कोई संबंध नहीं।	ज्ञान दर्पण का कर्मों के संक्रमण के साथ कोई संबंध नहीं।

विशेष अधिकार

८०७. दर्पण में देखकर दर्पण पर मरहम पट्टी चिपकाने से घायल का जख्म भर नहीं जाता।	त्रिकाल स्वस्थ ज्ञान दर्पण में स्वरूप का दर्शन करने पर अनादिकालीन घायल मिथ्यादृष्टी के मिथ्यात्व का जख्म ही दूर हो जाता है।
८०८. किसी जीव को अपने कर्मोदय से दर्पण का योग प्राप्त होता है।	प्रत्येक आत्मा कर्मोदय से न्यारा ज्ञान दर्पण है।
८०९. दर्पण अचेतन है।	ज्ञान दर्पण चेतन है।
८१०. जब रात नहीं कटती, तब दुःखी होकर दर्पण को देखते हैं।	ज्ञान दर्पण को देखकर अनंत काल आनन्दमय बीत जाता है।
८११. व्यवहार से दर्पण आत्मा का है।	निश्चय से आत्मा स्वयं ज्ञान दर्पण है।
८१२. परपदार्थों के प्रति राग नहीं रहेगा, तो दर्पण को कौन देखेगा?	परपदार्थों के प्रति राग नहीं रहेगा, तो ज्ञान दर्पण को ही देखेगा।
८१३. भीड़ में अटका हुआ दर्पण निर्विकल्प रहता है।	भीड़ में अटका हुआ ज्ञान दर्पण निर्विकल्प रहता है।
८१४. लौकिक दूरवर्ती पदार्थों को देखने के लिये दर्पण का उपयोग होता है।	दूरवर्ती पदार्थ ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं।
८१५. किसी की आँख दर्पण का काम कर सकती है।	अद्वितिय अक्षय चैतन्य चक्षु स्वयं ज्ञान दर्पण है।
८१६. जो स्त्री दर्पण में देखती है, उस स्त्री की ओर पुरुष देखते हैं।	जो जीव ज्ञान दर्पण को देखता है, उस ज्ञानी की ओर पुरुषाकार लोक के सभी जीव भक्तिभाव से देखते हैं।
८१७. दर्पण शुद्ध तो होता है, परन्तु बुद्ध नहीं होता।	ज्ञान दर्पण शुद्ध भी होता है और बुद्ध भी होता है।

८१८. दर्पण ज्ञान का विषय है।	ज्ञान दर्पण दृष्टि का विषय है।
८१९. वसियत में दर्पण दिया जा सकता है।	वसियत में ज्ञान दर्पण दिया नहीं जा सकता।
८२०. वसियत में दर्पण लिया जा सकता है।	वसियत में ज्ञान दर्पण लिया नहीं जा सकता।
८२१. दर्पण को सम्भालकर न रखने पर सागर में गिर जाता है।	ज्ञान दर्पण को सम्भालकर न रखने पर संसार सागर में गिर जाता है।
८२२. दर्पण संतुलित होता है।	ज्ञान दर्पण संतुलित होता है।
८२३. दर्पण के आश्रय से सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र नहीं हुआ।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र हुआ।
८२४. दर्पण को तीर्थंकर पद से क्या लेना–देना?	ज्ञान दर्पण को तीर्थंकर पद से क्या लेना–देना?
८२५. जिसने दर्पण दिया, उसका सहकार जानो।	जिनने ज्ञान दर्पण दिया, उनका उपकार जानो।
८२६. क्या दर्पण कभी पुकार करता है?	क्या ज्ञान दर्पण कभी पुकार करता है?
८२७. निगोदिया दर्पण लेकर नहीं आते।	निगोदिया स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
८२८. सिद्ध दर्पण लेकर नहीं जाते।	सिद्ध स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
८२९. दर्पण को रस्सी के साथ बांधकर रखा जा सकता है।	भगवान आत्मा तक पहुँचने के लिये ज्ञान दर्पण स्वयं रस्सी है।
८३०. लौकिक सूक्ष्म पदार्थों को देखने के लिये दर्पण का उपयोग होता है।	सूक्ष्म पदार्थ ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होते हैं।
८३१. दर्पण के पीछे दौड़ना होता है।	ज्ञान दर्पण के पीछे दौड़ना नहीं होता।
८३२. बुलेट प्रुफ दर्पण को गोली छूती तो है, परन्तु कुछ करती नहीं है।	ज्ञान दर्पण को गोली तो नहीं, किसी की गाली भी नहीं छूती।

८३३. दर्पण के विकल्प का जन्म है।
ज्ञान दर्पण के विकल्प का जन्म है।

८३४. दर्पण के विकल्प का मरण है।
ज्ञान दर्पण के विकल्प का मरण है।

८३५. दर्पण की खदान नहीं होती।
खदान में भी ज्ञान दर्पण होते हैं।

८३६. दीवार पर टंगा होने पर भी दर्पण का मुख दीवार की ओर नहीं होता।
राख की दीवार सह एक क्षेत्रावगाह होने पर भी ज्ञान दर्पण का सुख राख की दीवार में नहीं होता।

८३७. कोई जीव दर्पण को पाकर भी दर्पण को भोगने से वंचित रह जाते हैं।
कोई जीव ज्ञान दर्पण को पाकर भी ज्ञान दर्पण को भोगने से वंचित नहीं रहते।

८३८. दर्पण से दूरी बनाकर दर्पण में प्रतिबिम्बित दृश्य को देखा जाता है।
ज्ञान दर्पण स्वयं ही ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित दृश्य को देखता है।

८३९. दर्पण को देखना मिथ्यात्व नहीं है, बल्कि दर्पण को अपना मानना और स्व को अपना न मानना मिथ्यात्व है।
ज्ञान दर्पण को न देखना मिथ्यात्व नहीं है, बल्कि ज्ञान दर्पण को अपना न मानना और पर को अपना मानना मिथ्यात्व है।

८४०. दर्पण स्थिर होने के लिये भटकता है।
ज्ञान दर्पण स्थिर होने के लिये भटकता है।

८४१. दर्पण का उपयोग मनुष्य ही करते हैं।
ज्ञान दर्पण में चारों गतियों के जीवों का उपयोग स्थिर हो सकता है।

८४२. फोन में दर्पण बाद में आया।
ज्ञान दर्पण में फोन में दर्पण पहले आया।

८४३. पर्स में दर्पण है।
ज्ञान दर्पण में पर्स का प्रतिबिम्ब है।

८४४. दर्पण बेजान है।	ज्ञान दर्पण जीवंत है।
८४५. दर्पण से महान चिंतामणि है।	चिंतामणि से महान ज्ञान दर्पण है।
८४६. संसार में दर्पण के दर्शन दुर्लभ हैं।	संसार में ज्ञान दर्पण के दर्शन महादुर्लभ हैं।
८४७. रेगिस्तान में तुम्हें दर्पण नहीं मिलेगा।	रेगिस्तान में ज्ञान दर्पण नहीं मिटेगा।
८४८. दर्पण को तोड़ने पर दर्पण में से प्रतिबिम्बित पदार्थ बाहर नहीं निकलते हैं।	ज्ञान दर्पण में से प्रतिबिम्बित ज्ञेय बाहर नहीं निकलते हैं।
८४९. दर्पण ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण ज्ञान दर्पण में प्रतिबिम्बित होता है।
८५०. जिस दर्पण पर धूल न लगी हो, वह दर्पण धूल से रहित है।	जिस ज्ञान दर्पण पर रागादि भावों की धूल न लगी हो, वह ज्ञान दर्पण रागादि भावों से रहित है।
८५१. ऐसे भी आदिवासी हैं, जिन्होंने कदापि दर्पण नहीं देखा है।	ऐसे भी अनादिवासी अज्ञानी हैं, जिन्होंने कदापि ज्ञान दर्पण नहीं देखा है।
८५२. मैंने वन (एक) देश में दर्पण को देखकर चलते लोगों को देखा है और स्वयं भी चला हूँ।	मैं वन में ज्ञान दर्पण को देखकर विहार करने वाले मुनि के दर्शन की एवं स्वयं भी ज्ञान दर्पण दर्शन विहारी होने की भावना भाता हूँ।
८५३. दर्पण के दीवाने तो बहुत मिले।	ज्ञान दर्पण के दीवाने कहाँ और कब मिलेंगे?
८५४. इस शास्त्र को लिखते-लिखते उंगली सूज गई है, फिर भी सामने जो दर्पण है, उसे कुछ नहीं हुआ।	इस शास्त्र को लिखते-लिखते उंगली सूज गई है, फिर भी भीतर जो ज्ञान दर्पण है, इसे कुछ नहीं हुआ।

८५५. विशाल शहर में दर्पण का मेला लगा है, अपना दर्पण भी लेकर आना।

सिद्धालय में ज्ञान दर्पण का मेला लगा है, अपना ज्ञान दर्पण भी लेकर आना।

८५६. दर्पण और ज्ञान दर्पण को देखकर ज्ञान दर्पण सहस्त्री लिखने का विकल्प आया, यह दर्पण की महानता नहीं है।

दर्पण और ज्ञान दर्पण को देखकर ज्ञान दर्पण सहस्त्री लिखने का विकल्प आया, यह ज्ञान दर्पण की महानता नहीं है।

८५७. लोक में दर्पण प्रसिद्ध है।

लोकाग्र पर ज्ञान दर्पण सिद्ध हैं।

१४२ ज्ञान दीपक ! लक्षण अधिकार

८५८. दर्पण के आश्रय से जीव परार्थी होता है।

ज्ञान दर्पण के आश्रय से जीव आत्मार्थी होता है।

८५९. कोई जीव दर्पण पर दृष्टि करके अनेकांतवादी नहीं हो सकता।

जीव ज्ञान दर्पण पर दृष्टि करके अनेकांतवादी होता है।

८६०. दर्पण का साथी परतंत्र है।

ज्ञान दर्पण स्वरूपसाथी स्वतंत्र है।

८६१. दर्पण को समर्पित मत होना।

ज्ञान दर्पण को समर्पित होना।

८६२. दर्पण में देखने वाला परास्तिमुखी होता है।

ज्ञान दर्पण में देखने वाला स्वस्तिमुखी होता है।

८६३. दर्पण के व्यापारी के दासानुदास नहीं होते।

ज्ञान दर्पण का स्वरूप समझाने वाले सद्गुरु का दासानुदास होना।

८६४. दर्पण की अनित्यता संग करने योग्य नहीं है।

ज्ञान दर्पण की नित्यता का अनुभव कर सत्संगी होना।

८६५. दर्पण को जानने से कोई अध्यात्मवेत्ता नहीं होता।

ज्ञान दर्पण को समझने से कोई भी जीव अध्यात्मवेत्ता होता है।

८६६. दर्पण के स्वरूप में शंका करने से अहित न होगा।

ज्ञान दर्पण के स्वरूप में शंका करने से अहित होगा, अतः निःशंक होना।

८६७. दर्पण में देखने वाला प्रत्येक व्यक्ति आज्ञाकारी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में देखने वाला प्रत्येक जीव आज्ञाकारी होता है।
८६८. दर्पण की ओर दृष्टि करने वाला मृतदृष्टी है।	ज्ञान दर्पण की ओर दृष्टि करने वाला अमृतदृष्टी है।
८६९. दर्पण में देखने पर मोह की ज्वाला फैलती है।	ज्ञान दर्पण में देखने वाला जीव मोहदाहक होता है।
८७०. दर्पण में सागर का प्रतिबिम्ब होता है।	ज्ञान दर्पण में श्रुतसागर का प्रतिबिम्ब होता है।
८७१. दर्पण में देखने वाला संयमी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में देखने वाला संयमी होता है।
८७२. दर्पण में देखने वाला पूर्णदृष्टी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में देखने वाला पूर्णदृष्टी होता है।
८७३. दर्पण का आश्रय लेने से कोई विनम्र नहीं हो जाता।	ज्ञान दर्पण का आश्रय लेने से कोई भी जीव विनम्र होता है।
८७४. परम कृपालु देव को दर्पण में रुचि नहीं थी।	परम कृपालु देव को ज्ञान दर्पण में रुचि थी।
८७५. दर्पण की चर्चा करके व्यवहार से भी सत्संगी नहीं हो सकते।	ज्ञान दर्पण की चर्चा करके ज्ञानी व्यवहार से सत्संगी होता है।
८७६. दर्पण में लीन होने वाला स्थितप्रज्ञ नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में लीन होने वाला स्थितप्रज्ञ होता है।
८७७. दर्पण की सफाई करने से सेवक का आत्महित नहीं हो जाता।	ज्ञान दर्पण की सफाई करने से सेवक का आत्महित अवश्य होता है।
८७८. दर्पण की भक्ति करने वाला कोई भक्त नहीं होता।	ज्ञान दर्पण की भक्ति करने वाला जीव सच्चा भक्त होता है।
८७९. दर्पण को प्रधानता देने से कोई स्वरूपप्रधानी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को प्रधानता देने से जीव स्वरूपप्रधानी होता है।
८८०. दर्पण के दर्शन से निरपेक्ष दशा प्रकट नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के दर्शन से निरपेक्ष दशा प्रकट होती है।

८८१. दर्पण में देखने से कोई वैराग्यदीक्षित नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में देखने से कोई वैराग्यदीक्षित होता है।
८८२. दर्पण का आश्रय लेने वाला गुणग्राही नहीं है।	ज्ञान दर्पण का आश्रय लेने वाला जीव गुणग्राही होता है।
८८३. दर्पण में प्रत्याख्यानदृष्टा का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता।	ज्ञान दर्पण में प्रत्याख्यानदृष्टा का प्रतिबिम्ब पड़ता है।
८८४. दर्पण के बल पर कोई दर्शनमोहजयी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण के बल पर जीव दर्शनमोहजयी होता है।
८८५. दर्पण पर दृष्टि करने वाला पर्यायदृष्टी होता है।	ज्ञान दर्पण पर दृष्टि करने वाला द्रव्यदृष्टी होता है।
८८६. दर्पण की शरण में जाने वाला अशरण नहीं होता।	ज्ञान दर्पण की शरण में जाने वाला अशरण होता है।
८८७. दर्पण में देखकर चलने वाला लौकिक मार्गानुसारी होता है।	ज्ञान दर्पण में देखकर चलने वाला अलौकिक मार्गानुसारी होता है।
८८८. दर्पण का भोगी न्यायप्रिय नहीं होता।	ज्ञान दर्पण का भोगी न्यायप्रिय होता है।
८८९. दर्पण तो दर्पण ही है, ज्ञान दर्पण नहीं।	ज्ञान दर्पण तो ज्ञान दर्पण ही है, दर्पण नहीं।
८९०. दर्पण में देखने मात्र से कोई मौनाभिलाषी नहीं हो जाता।	ज्ञान दर्पण में देखने मात्र से जीव मौनाभिलाषी होता है।
८९१. दर्पण के आश्रय से कोई ज्ञानदानी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से जीव ज्ञानदानी होता है।
८९२. दर्पण स्वयं सिद्ध नहीं है।	ज्ञान दर्पण स्वयं सिद्ध है।
८९३. लोक में समाजप्रिय दर्पण को बांटता है।	आध्यत्मिक समाजप्रिय ज्ञान दर्पण के ज्ञान की प्रभावना करता है।
८९४. दर्पण में सावधान असत्सावधान है।	ज्ञान दर्पण में सावधान सत्सावधान है।
८९५. दर्पण के आश्रय से कोई धीर नहीं होता।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से जीव धीर होता है।

८९६. दर्पण के असंगी स्वरूप को समझने से आत्महित नहीं होता।	ज्ञान दर्पण के असंगी स्वरूप को समझने से अवश्य आत्महित होता है।
८९७. दर्पण त्रिकाल नहीं, अतः त्रिकाल असुशून्य नहीं।	ज्ञान दर्पण त्रिकाल असुशून्य है।
८९८. सूर्यकीर्ति से दर्पण पर असर हो सकता है।	सूर्यकीर्ति से ज्ञान दर्पण पर कोई असर नहीं हो सकता।
८९९. पररूपप्रेमी दर्पण में देखता है।	स्वरूपप्रेमी ज्ञान दर्पण में देखता है।
९००. फकीर के पास दर्पण हो सकता है।	ज्ञान दर्पण का अनुभवी फकीर हो सकता है।
९०१. कोई समाचारी हो या न हो, दर्पण को क्या प्रयोजन?	कोई समाचारी हो या न हो, ज्ञान दर्पण को क्या प्रयोजन?
९०२. दर्पण में देहातीत का प्रतिबिम्ब नहीं पड़ता।	ज्ञान दर्पण में देहातीत का भी प्रतिबिम्ब पड़ता है।
९०३. दर्पण की यथार्थ श्रद्धा से कोई निर्मोही नहीं हो जाता।	ज्ञान दर्पण की यथार्थ श्रद्धा से जीव निर्मोही होता है।
९०४. ज्ञान दीपंकर को दर्पण में रुचि नहीं होती।	ज्ञान दीपंकर को ज्ञान दर्पण में रुचि होती है।
९०५. दर्पण में देह की शोभा प्रतिबिम्बित होती है।	ज्ञान दर्पण में रत्नत्रयसुशोभित की शोभा प्रतिबिम्बित होती है।
९०६. दर्पण का विचारक सिर्फ विचारक रह जाता है।	ज्ञान दर्पण का विचारक सिर्फ विचारक न रहकर भगवान हो जाता है।
९०७. मध्यलोकवासी दर्पण में देखते हैं।	चैतन्यलोकवासी ज्ञान दर्पण में देखते हैं।
९०८. दर्पण में देखने वाला प्रत्येक व्यक्ति सद्व्यवहारी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में देखने वाला प्रत्येक व्यक्ति सद्व्यवहारी होता है।
९०९. दर्पण तत्त्ववेदी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण तत्त्ववेदी होता है।
९१०. दर्पण पवित्र हो सकता है।	ज्ञान दर्पण परम पवित्र होता है।

९११. दर्पण का आश्रय लेने वाले लक्ष्मीनारायण नहीं होते।	ज्ञान दर्पण का आश्रय लेने वाले लक्ष्मीनारायण होते हैं।
९१२. दर्पण का अनुगामी अजीव तत्त्वानुगामी होता है।	ज्ञान दर्पण का अनुगामी जीव तत्त्वानुगामी होता है।
९१३. दर्पण का विलासी भोगविलासी होता है।	ज्ञान दर्पण का विलासी ज्ञानविलासी होता है।
९१४. दर्पण गुरुराज और लघुराज में पक्षपात नहीं करता।	ज्ञान दर्पण गुरुराज और लघुराज में पक्षपात नहीं करता।
९१५. दर्पण के चिंतन से कोई उपशांतवादी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण के चिंतन से जीव उपशांतवादी होता है।
९१६. दर्पण के सम्बन्ध में विद्यालय में सुनने वाला दिव्यश्रुति नहीं है।	ज्ञान दर्पण के सम्बन्ध में समवसरण में सुनने वाला दिव्यश्रुति है।
९१७. परिवारप्रेमी दर्पण में लीन नहीं हो पाते।	गुणभेद के परिवारप्रेमी ज्ञान दर्पण में लीन नहीं हो पाते।
९१८. दर्पण अचलप्रज्ञ नहीं होता।	ज्ञान दर्पण अचलप्रज्ञ होता है।
९१९. दर्पण में एकत्व करके दर्पण के फूटने की क्रिया में उदयप्रयोगी नहीं हो सकते।	ज्ञान दर्पण में एकत्व करके दर्पण के फूटने की क्रिया में उदयप्रयोगी हो सकते हैं।
९२०. दर्पण में निर्विकल्पभोजी का देह ही प्रतिबिम्बित होता है।	ज्ञान दर्पण में निर्विकल्पभोजी का देह ही नहीं, निर्विकल्प दशा भी प्रतिबिम्बित होती है।
९२१. सद्गुरुदीप को दर्पण में परायेपन की श्रद्धा होती है।	सद्गुरुदीप को ज्ञान दर्पण में अपनेपन की श्रद्धा होती है।
९२२. सिद्धपुरवासी के पास दर्पण नहीं होता।	सिद्धपुरवासी स्वयं ज्ञान दर्पण है।
९२३. सुवर्णभूमि दर्पण में शोभायमान होती है।	सुवर्णभूमि ज्ञान दर्पण में शोभायमान होती है।
९२४. तीर्थयात्री दर्पण से तीर्थयात्रा नहीं करते।	ज्ञान तीर्थयात्री ज्ञान दर्पण से तीर्थयात्रा करते हैं।

१२५. सीमंधर दर्पण में सीमंधर पदार्थ ही प्रतिबिम्बित होते हैं।	सीमंधर ज्ञान दर्पण में असीम द्रव्य प्रतिबिम्बित होते हैं।
१२६. आनन्दभोजी दर्पण में नहीं देखते।	आनन्दभोजी ज्ञान दर्पण में देखते हैं।
१२७. दर्पण में देखने पर निर्मोही मुनि का स्मरण हो सकता है।	ज्ञान दर्पण में देखने पर जीव स्वयं निर्मोही मुनि हो सकता है।
१२८. निर्मल दर्पण में निर्मल सागर शोभायमान होता है।	निर्मल ज्ञान दर्पण में निर्मल सागर भगवान आत्मा शोभायमान होता है।
१२९. दर्पण रूपी स्वरूपग्राही होता है।	ज्ञान दर्पण रूपी एवं अरूपी स्वरूपग्राही होता है।
१३०. दीवार से मुक्त दर्पण पड़ोसीपार होता है।	राख की दीवार से मुक्त ज्ञान दर्पण पड़ोसीपार होता है।
१३१. दर्पण का आश्रय लेने वाला सद्ज्ञानग्राही नहीं हो सकता।	ज्ञान दर्पण का आश्रय लेने वाला सद्ज्ञानग्राही होता है।
१३२. दर्पण परमेश्वरप्रेमी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण परमेश्वरप्रेमी नहीं होता।
१३३. मोहजयी चारित्रवान दर्पण का विरोध नहीं करता।	मोहजयी चारित्रवान ज्ञान दर्पण का विरोध नहीं करता।
१३४. समाधिप्रज्ञ का उपयोग दर्पण में स्थित नहीं होता।	समाधिप्रज्ञ का उपयोग ज्ञान दर्पण में स्थित होता है।
१३५. लोक में स्वार्थी दर्पण में देखते हैं।	अध्यात्म में स्वार्थी ज्ञान दर्पण में देखते हैं।
१३६. मुक्तविहारी दर्पण निर्लेप होता है।	मुक्तविहारी ज्ञान दर्पण निर्लेप होता है।
१३७. समश्रेणीसिद्ध में दर्पण का मिश्रण नहीं होता।	समश्रेणीसिद्ध में अनंत ज्ञान दर्पण का मिश्रण नहीं होता।
१३८. दर्पण अनामी है, उसका नाम तो हमने दिया है।	ज्ञान दर्पण अनामी है, उसका नाम तो हमने दिया है।

९३९. दर्पण में चाँद का दूजाचंद जैसा प्रतिबिम्ब होता है।	ज्ञान दर्पण में परमात्मा का दूजाचंद जैसा प्रतिबिम्ब होता है।
९४०. विश्वविजेता भी दर्पण में देखते हैं।	विश्वविजेता भी ज्ञान दर्पण में देखते हैं।
९४१. प्रत्येक दर्पण सदैव क्षुधामुक्त होता है।	प्रत्येक ज्ञान दर्पण स्वभाव से सदैव क्षुधामुक्त होता है।
९४२. दर्पण जैसे पुद्गल को छोड़कर दरियादिल बनो।	ज्ञान दर्पण को पर्याय में ग्रहण कर ज्ञान दरियादिल बनो।
९४३. दर्पण आनन्ददाता नहीं है।	ज्ञान दर्पण आनन्ददाता है।
९४४. तत्क्षणजीवी अज्ञानी दर्पण में लीन होकर दुःख भोगते हैं।	तत्क्षणजीवी ज्ञानी ज्ञान दर्पण में लीन होकर सुख भोगते हैं।
९४५. नयचक्रवर्ती दर्पण को जानते हैं, भोगते नहीं।	नयचक्रवर्ती ज्ञान दर्पण को जानते भी हैं और भोगते भी हैं।
९४६. दर्पण के निर्लेप स्वभाव को जानने से दर्पण पर लगी धूल दूर नहीं होती है।	ज्ञान दर्पण के निर्लेप स्वभाव को जानने से ज्ञान दर्पण पर लगी कर्मों की धूल दूर होती है।
९४७. ज्ञानसाक्षी को दर्पण में एकत्व नहीं होता।	ज्ञानसाक्षी को ज्ञान दर्पण में एकत्व होता है।
९४८. तत्कालप्रयोगी दर्पण पर दाग देखकर तत्काल दूर करते हैं।	तत्कालप्रयोगी ज्ञान दर्पण पर दाग देखकर तत्काल दूर करते हैं।
९४९. दर्पण विकल्पविमुक्त है।	ज्ञान दर्पण विकल्पविमुक्त है।
९५०. शिववासी दर्पण त्यागी हैं।	शिववासी ज्ञान दर्पण भोगी हैं।
९५१. जो आपके दर्पण की धूल साफ करने में निमित्त हों, उनके प्रति कृतज्ञ होना।	जो आपके ज्ञान दर्पण की धूल साफ करने में निमित्त हों, उनके प्रति कृतज्ञ होना।
९५२. समझवान के पास दर्पण हो सकता है।	ज्ञान दर्पण स्वयं समझवान होता है।
९५३. दर्पण भोगालिप्त होता है।	ज्ञान दर्पण भोगालिप्त होता है।

९५४. दर्पण सत् है, परन्तु सच्चिदानंद नहीं।	ज्ञान दर्पण स्वयं सच्चिदानंद है।
९५५. दृष्टिमुक्त की दृष्टि दर्पण पर नहीं होती।	दृष्टिमुक्त की दृष्टि ज्ञान दर्पण पर होती है।
९५६. दर्पण का अनुभव अभूतपूर्व नहीं है।	ज्ञान दर्पण का अनुभव अभूतपूर्व नहीं है।
९५७. दर्पण अपने में परिपूर्ण है।	ज्ञान दर्पण अपने में परिपूर्ण है।
९५८. दर्पण विकल्पशून्य है।	ज्ञान दर्पण विकल्पशून्य है।
९५९. दर्पण का चिंतन करने में चिंतनशील मत होना।	ज्ञान दर्पण का चिंतन करने में चिंतनशील होना।
९६०. दर्पण में दीपक की ज्योति प्रतिबिम्बित होती है।	ज्ञान दर्पण में चैतन्य ज्योति प्रतिबिम्बित होती है।
९६१. दर्पण के दर्शन से अशरीरी दशा प्रकट नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के दर्शन से अशरीरी दशा प्रकट होती है।
९६२. इन्द्रियज्ञान से दर्पण को जान सकते हैं।	अतीन्द्रियज्ञान से ज्ञान दर्पण को जान सकते हैं।
९६३. दर्पण का जिज्ञासु होने से आत्महित नहीं होगा।	ज्ञान दर्पण का जिज्ञासु होने से आत्महित होगा।
९६४. समाधिस्थित दर्पण में स्थित नहीं होते।	समाधिस्थित ज्ञान दर्पण में स्थित होते हैं।
९६५. जो दर्पण में देखें, वे पुरुषार्थी नहीं हैं।	जो ज्ञान दर्पण में देखें, वे पुरुषार्थी हैं।
९६६. दर्पण के ज्ञाता ज्ञानवेदी नहीं हैं।	ज्ञान दर्पण के ज्ञाता ज्ञानवेदी हैं।
९६७. एक भी दर्पण शिवगामी नहीं हुआ।	अनंत ज्ञान दर्पण शिवगामी हुए।
९६८. दर्पण के ध्यानी पररूपध्यानी हैं।	ज्ञान दर्पण के ध्यानी स्वरूपध्यानी हैं।
९६९. अमृतबोधी को दर्पण की अनित्यता की जागृति रहती है।	अमृतबोधी को ज्ञान दर्पण की नित्यता की जागृति रहती है।

९७०. दर्पण को देखकर कोई जीवनमुक्त नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को देखकर जीव जीवनमुक्त होता है।
९७१. आत्मजागृत दर्पण में देखकर भी जागृत है।	आत्मजागृत ज्ञान दर्पण में देखकर भी जागृत है।
९७२. दर्पण की अनित्यता के बोध के बल पर जीवनजागृत होना।	ज्ञान दर्पण की नित्यता के अनुभव के बल पर जीवनजागृत होना।
९७३. बुद्धिमान लोग दर्पण में लीन नहीं होते।	बुद्ध ज्ञान दर्पण में लीन होते हैं।
९७४. दर्पण में देखने से कोई श्रीसुशोभित नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में देखने से जीव श्रीसुशोभित होता है।
९७५. दर्पण में देखने से मुमुक्षु का मोक्ष नहीं होगा।	ज्ञान दर्पण में देखने से मुमुक्षु का मोक्ष होगा।
९७६. दर्पण में मृत्यु को देखकर अज्ञानी निराश होता है।	ज्ञान दर्पण में जीवन को देखकर ज्ञानी उदासीन होता है।
९७७. लोक में दर्पण दिखाने वाले के प्रति अनुग्रहित होना।	अध्यात्म में ज्ञान दर्पण दिखाने वाले के प्रति अनुग्रहित होना।
९७८. दर्पण का ज्ञानी पररूपज्ञानी है।	ज्ञान दर्पण का ज्ञानी स्वरूपज्ञानी है।
९७९. स्वरूपानंदी दर्पण में लीन नहीं होते।	स्वरूपानंदी ज्ञान दर्पण में लीन होते हैं।
९८०. सिद्धपुरगामी के पास दर्पण नहीं होता।	सिद्धपुरगामी स्वयं ज्ञान दर्पण हैं।
९८१. पुद्गल दर्पण जड़ है।	केवली का ज्ञान दर्पण सर्वज्ञ है।
९८२. दर्पण को अपना माने, वह दुःखी है।	ज्ञान दर्पण को अपना माने, वह सुखी है।
९८३. कर्ण और कर्णवीर के प्रतिबिम्ब से दर्पण अप्रभावित रहता है।	कर्ण और कर्णवीर के प्रतिबिम्ब से ज्ञान दर्पण अप्रभावित रहता है।
९८४. दर्पण के मेले में सभी ग्राहकों का हार्दिक स्वागत है।	ज्ञान दर्पण के मेले में सभी ज्ञान दर्पणों का हार्दिक स्वागत है।

९८५. दर्पण की स्वच्छता पर्यायपार है।	ज्ञान दर्पण की स्वच्छता पर्यायपार है।
९८६. दर्पण रूपी है।	ज्ञान दर्पण रूपातीत है।
९८७. दर्पण होनहारहोंशी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण होनहारहोंशी होता है।
९८८. दर्पण के सिद्धांतवादी संसारी होते हैं।	ज्ञान दर्पण के सिद्धांतवादी सिद्ध होते हैं।
९८९. दर्पण का यथार्थ श्रद्धानी सत्श्रद्धानी नहीं कहा जाता।	ज्ञान दर्पण का यथार्थ श्रद्धानी सत्श्रद्धानी कहा जाता है।
९९०. दर्पण सेवाभावी नहीं है।	ज्ञान दर्पण सेवाभावी है।
९९१. दर्पण को देखने से कोई समदृष्टी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण को देखने से जीव समदृष्टी होता है।
९९२. दर्पण में वत्सल का प्रतिबिम्ब पड़ता है।	ज्ञान दर्पण में वत्सल का प्रतिबिम्ब पड़ता है।
९९३. दर्पण में स्थिर होने से कोई वीतरागी नहीं होता।	ज्ञान दर्पण में स्थिर होने से जीव वीतरागी होता है।
९९४. दर्पण की सुरक्षा करने वाला सुधर्मी नहीं है।	ज्ञान दर्पण की सुरक्षा करने वाला सुधर्मी है।
९९५. दर्पण के आश्रय से सहज दशा प्रकट नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से सहज दशा प्रकट होती है।
९९६. दर्पणवासी पररूपवासी है।	ज्ञान दर्पणवासी स्वरूपवासी है।
९९७. मौनी का दर्पण में प्रवेश नहीं होता।	मौनी का ज्ञान दर्पण में प्रवेश नहीं होता।
९९८. दर्पण के आश्रय से अरिहंत दशा प्रकट नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से अरिहंत दशा प्रकट होती है।
९९९. दर्पण के आश्रय से सिद्ध दशा प्रकट नहीं होती।	ज्ञान दर्पण के आश्रय से सिद्ध दशा प्रकट होती है।
D arpan = *D ko Arpan =* सहस्त्री दीपकों को अर्पण	*Gyaan Darpan =* *GD ko Arpan =* ज्ञान दीपकों को अर्पण

रचयिता की सर्वाधिक लोकप्रिय रचनायें

१. १४२ ज्ञान दीपक! बोधामृत (गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी)

२. आत्मसिद्धि शास्त्र संक्षिप्त टीका (१५१ देशों में उपलब्ध)

३. ज्ञायकभाव प्रकाशक – समयसार टीका (अंग्रेजी)

४. ज्ञान से ज्ञायक तक (हिन्दी, गुजराती)

५. आत्मसिद्धि अनुशीलन (गुजराती, अंग्रेजी)

६. महावीर का वारिस कौन? (गुजराती)

७. क्षणिक का बोध और नित्य का अनुभव (गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी)

८. मंगल सूत्र – चैतन्य स्वभाव (हिन्दी)

९. जैनधर्म रहस्य (हिन्दी)

१०. पुण्यविराम (गुजराती)

११. क्रमबद्ध पुरुषार्थ (हिन्दी, गुजराती)

१२. मुझे मत मारो (इंडोनेशियन)

१३. आतंकवाद में अनेकांतवाद (हिन्दी, अंग्रेजी)

१४. स्वरूप ही ऐसा है (गुजराती, हिन्दी)

१५. मरण का हरण (हिन्दी)

१६. अंक अंकित अध्यात्म (हिन्दी)

१७. आध्यात्मिक शब्दकोष (हिन्दी)

१८. ध्यान से पूर्व तत्त्वविचार (हिन्दी, गुजराती)

१९. ज्ञानदर्पण सहस्त्री (हिन्दी)

चैतन्य स्वभावी भगवान आत्मा, अनादि अनंत शुद्ध चैतन्य मात्र है, ज्ञान मात्र है, मैं शुद्ध चैतन्यमात्र, ज्ञान मात्र भगवान आत्मा हूँ। प्रतिसमय यह जागृति बनी रहे, इस जागृति का नाम धर्म है। देह की प्रत्येक क्रिया के काल में और विकल्पों के बहते प्रवाह के काल में ज्ञानी को प्रतिसमय यह जागृति रहती है कि मैं चैतन्य तत्त्व इस देह की किसी भी क्रिया में और विकल्पों के बहते प्रवाह में कहीं भी मिला नहीं हूँ, ऐसा शुद्ध चैतन्य तत्त्व मैं हूँ। प्रतिसमय स्वयं की शुद्ध चैतन्य सत्ता का बोध, आत्मजागृति ही धर्म है।

चैतन्य तत्त्व की निर्विकल्प अनुभूति होते ही ज्ञान दीपक प्रज्वलित होता है। फिर उसी प्रज्वलित ज्ञान दीपक से मोक्षमार्ग प्रकाशित होता है, मोक्षमार्ग पर यात्रा प्रारंभ होती है। बस, ज्ञानी स्वयं को राख की दीवार का पड़ोसी मानता है और मोक्षमार्ग का मुसाफिर जानता है। ज्ञान दीपक प्रज्वलित होते ही, नया और कुछ भी नहीं होता, सिर्फ यह प्रतीति होती है कि मैं त्रिकाल प्रज्वलित ज्ञान दीपक हूँ। चैतन्य ज्योति की सत्ता में रागादि विकारी भावरूपी धुआँ कहीं भी नहीं, तो फिर देहरूपी मिट्टी का तो कहना ही क्या? चैतन्य तत्त्व की निर्विकल्प अनुभूति होते ही स्वयं से मुलाकात होती है। ज्ञान दर्पण में त्रिकाल प्रज्वलित परम ज्ञान दीपक प्रतिबिम्बित होता है।